Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا (सूरत अन्निसा आयत :30)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अपने माल नाजायज़ तरीक़ा से न खाया करो। हां यदि वह ऐसा व्यापार हो जो आपसी सहमति से हो और तुम अपने आप को कत्ल न करो। नि:सन्देह अल्लाह तुम पर बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक- 50

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फरीद

11 रबीयुल अव्वल 1441 हिजरी कमरी 29 इख़ा 1399 हिजरी शमसी 10 दिसम्बर 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुदा की मार्फ़त में जो लज़्ज़त है वह एक ऐसी चीज़ है कि जो न आँखों ने देखी और न कानों ने सुनी न किसी और कर्म इन्द्रिय ने इसको महसूस किया है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ताऊन अज़ाब है

अल्लाह तआला ने इस का नाम रुज्ज़ रखा है। रुज्ज़ अज़ाब को भी कहते हैं। शब्दकोष की किताबों में लिखा है कि ऊंट की रान के गोश्त में यह बीमारी होती है और इस में एक कीड़ा पड़ जाता है जिसे नग़फ़ कहते हैं। इससे एक सूक्ष्म बिन्दु समझ में आता है कि चूँकि ऊंट की बनावट में एक किस्म की सरकशी पाई जाती है। तो इससे यह पाया गया कि जब इन्सानों में वह सरकशी के दिन पाए जाएं तो यह बड़ा अज़ाब उन पर नाज़िल होता है। और रुज्ज़ के अर्थ कोष में स्थायित्व के भी आए हैं। और यह बीमारी भी स्थायी होती है और घर से सबको विदा करके निकलती है। इस में यह भी दिखाया है कि यह बला घरों की सफ़ाई करने वाली है बच्चों को अनाथ बनाती और बेशुमार असहाय औरतों को विधवा कर देती है।

ग़ैर सेहत वाला माहौल भी ताऊन का कारण है

और रुज्ज़ के अर्थ में ग़ौर करने से इसका कारण भी समझ में आता है कि यह बीमारी गन्दगी और अपवित्रता से पैदा होती है। जहां अच्छी सफ़ाई नहीं होती, मकान की दीवारें बुरी और क़ब्रों का नमूना हैं, न रोशनी है न हवा आ सकती है, वहां सड़ांध का ज़हरीला माद्दा पैदा हो जाता है। इससे यह बीमारी पैदा हो जाती है। क़ुरआन करीम में जो आया है। وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ (अल-मुदस्सरि :6) हर एक किस्म की गंदगी से परहेज़ करो। हिजर दूर चले जाने को कहते हैं। इससे यह मालूम हुआ कि रुहानी पवित्रता चाहने वालों के लिए ज़ाहिरी पवित्रता और सफ़ाई भी ज़रूरी है। क्योंकि एक शक्ति का प्रभाव दूसरे पर और एक पक्ष का प्रभाव दूसरे पर होता है।

बाहरी पवित्रता का आन्तरिक अवस्था पर प्रभाव

दो अवस्थाऐं हैं। जो भीतरी हालत तक़्वा और पवित्रता पर क़ायम होना चाहती हैं वह ज़ाहिरी पवित्रता भी चाहते हैं। एक दूसरे स्थान पर अल्लाह तआला फ़रमाता है। اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ (अल-बकर: 223) अर्थात जो भीतरी और ज़ाहिरी पवित्रता के इच्छुक हैं मैं उनको दोस्त रखता हूँ। ज़ाहिरी पवित्रता भीतरी पवित्रता की सहायक और मदद करने वाली है। यदि इन्सान उसको छोड़ दे और शौच कर के भी सफाई न करे तो भीतरी पवित्रता पास भी न फटके। अत: याद रखो कि ज़ाहिरी पवित्रता अंदरूनी पवित्रता को चाहती है। इसलिए अनिवार्य है कि कम से कम जुम्अ: को नहाया अवश्य करो। हर नमाज़ में वुज़ू करो।

शेष पृष्ठ 12 पर

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह से हज़रत उम्र बिन तग़लब रज़ि की प्रशंसा और आपकी प्रसन्नता

हज़रत अम्र बिंत तग़लब से रिवायत है कि रसूले क़रीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास कुछ माल या कोई चीज़ लाई गई। आप स.अ.व. ने कुछ लोगों को वह बांट दी। आप स.अ.व. ने कुछ आदमियों को दिया और कुछ को नहीं दिया। फिर आप स.अ.व. को यह ख़बर पहुंची कि जिन लोगों को आप स.अ.व. ने छोड़ दिया था वो कुछ नाराज़ हैं। आप ने अल्लाह ताआला की हमद वर्णन की और उसकी प्रशंसा की। फिर फ़रमाया : इसके बाद। अल्लाह की क़सम में एक व्यक्ति को देता हूँ (और एक व्यक्ति को छोड़ देता हूँ) और हालाँकि जिसे छोड़ता हूँ वह मुझ को ज़्यादा प्यारा होता है तुलना में उस के जिसे मैं देता हूँ। लेकिन मैं कुछ लोगों को इसलिए देता हूँ कि उनके दिलों में बेचैनी और बेसबरी देखता हूँ और कुछ लोगों को उस परिपूर्णता और भलाई के हवाला कर देता हूँ और जो अल्लाह ताआला ने उन के दिलों में पैदा की होती है। इन्ही लोगों में उम्र बिन तग़लब रज़ि. भी हैं (ये कहते थे) ख़ुदा की कसम! मैं कदापि पसंद नहीं करता कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस बात के बदले में मुझे सुर्ख़ ऊंट मिलते।

(सही बुख़ारी, भाग 2, किताबुल जुम्मा, मतबूआ 2006 क़ादियान)

मुसलमानों ने हज़ार वर्ष तक मसीही देशों पर हुकूमत करके उन के सरदार की जिस इज़्ज़त का प्रकटन किया काश मसीही लोग दो तीन सौ वर्ष तक की हुकूमत पर ऐसे घमंडी नहीं होते ..... और मुसलमानों के उस एहसान का कुछ तो ख़्याल करते कि उन्होंने ईसा के विरुद्ध कभी आक्रामक क़दम नहीं उठाया।

"وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ (अलबकर: 26) की तफ़सीर में सय्यदना हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ। उन्हें वहां पाक साथी या पाक पत्नियाँ या पाक पति मिलेंगे। पाक साथी के अर्थों में तो किसी के लिए एतराज़ करने का अवसर ही नहीं क्योंकि इस सूरत में उसके ये अर्थ होंगे कि जन्नत में जिस प्रकार आहार एक दूसरे के सहायक होंगे इस प्रकार उसमें रहने वाले एक सभी दूसरे की अध्यात्म प्रगति में सहायता करने वाले होंगे मानों आन्तरिक और बाह्य हर प्रकार का अमन और सहायता प्राप्त होगी।

और यदि पति या पत्नी के अर्थ किए जाएं क्योंकि शादी शुदा मर्द और औरत दोनों के लिए बोला जाता है औरत का ज़ोज (जोड़ा) उसका पति है और पति का ज़ोज (जोड़ा) उसकी पत्नी, तो इस अवस्था में इसके एक अर्थ यह होंगे कि हर जन्नती के पास उस का वह जोड़ा रखा जाएगा जो नेक होगा। इस अवस्था में भी इस पर कोई एतराज़ नहीं पड़ सकता बल्कि यह तो तहरीक है कि मर्द को अपनी नेकी के साथ अपनी बीवी की नेकी का भी ख़्याल रखना चाहिए और औरत को अपनी नेकी के साथ अपने पति की नेकी का भी ख़्याल रखना चाहिए क्योंकि यदि वह सांसारिक जीवन की भांति अगले संसार में भी एक साथ रहना चाहते हैं तो चाहिए कि उनमें से हर एक दूसरे को भी नेक बनाने की कोशिश करे ताकि ऐसा न हो कि पति जन्नत में हो और पत्नी दोज़ख़ में हो। इन अर्थों की दृष्टी से ये रुहानी पाकीज़गी की एक उच्चतम शिक्षा है जिस पर एतराज़ करने के स्थान पर इसकी ख़ूबी की प्रशंसा करनी चाहिए।

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रिरेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (अन्तिम भाग-28)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की जर्मनी से लन्दन यू.के सकुशल वापसी।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

27 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक इतवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर 15 मिनट पर मस्जिद बिशारत ओसना ब्रूक में तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। अपने प्यारे आक़ा के अनुकरण में नमाज़ अदा करने के लिए जमाअत के लोगों की एक बहुत बड़ी संख्या सुबह 4 बजे से ही मस्जिद पहुंचना शुरू हो गई थी। सुबह साढ़े 4 बजे तक मस्जिद और बाहरी सेहन में लगी मार्कीज़ मर्दों तथा औरतों से भर चुकी थीं। इन सभी ने हुज़ूर अनवर के अनुकरण में नमाज़ फ़ज्र अदा की।

नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइश गाह पर तशरीफ़ ले आए। आज प्रोग्राम के अनुसार यहां से बेल्जियम के रास्ता से इस्लामाबाद, यू.के के लिए रवानगी थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ को अलविदा कहने के लिए जमाअत के मर्द तथा औरतों और बच्चे बच्चियां सुबह से ही मस्जिद के बाहरी सेहन में जमा होना शुरू हो गए थे। 10 बजकर 15 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए। प्रोग्राम के अनुसार आमला जमाअत ओसना ब्रूक के मेंबरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर ख़िचवाने का सौभाग्य पाया। मज्लिस इत्फ़ालुल अहमदिया ओसना ब्रूक ने इस साल अल्मे इनामी प्राप्त किया था। उन्होंने अपने अल्मे इनामी को थामे हुए अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर ख़िचवाने का सौभाग्य पाया। इस दौरान छोटे बच्चे एक लाइन में खड़े हो चुके थे। हुज़ूर अनवर ने स्नेह करते हुए इन बच्चों को चॉकलेट प्रदान फरमाए। इसके बाद हुज़ूर अनवर औरतों की तरफ़ तशरीफ़ ले गए और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फरमाए। इस दौरान औरतें दर्शन के सौभाग्य से लाभान्वित हुईं।

10 बजकर 30 मिनट पर हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई और क़ाफ़िला बरसल्ज़ (बेल्जियम) के लिए रवाना हुआ। जर्मनी की एक गाड़ी क़ाफ़िला को Escort कर रही थी जबकि बाक़ी ख़ुद्दाम की गाड़ियां क़ाफ़िला से पीछे थीं।

ओसना ब्रूक (Osnabrck) से बेल्जियम की दूरी 389 किलो मीटर है। जर्मनी में 94 किलोमीटर का सफ़र तय करने के बाद बॉर्डर क्रास करके हॉलैंड में दाख़िल हुए और फिर हॉलैंड में 195 किलो मीटर का सफ़र तय करने के बाद बेल्जियम की सीमाओं में दाख़िल हुए और 100 किलोमीटर का सफ़र तय करने के बाद 2 बजकर 20 मिनट पर अहमदिया मिशन हाऊस बैयतुस्सलाम (बरसल्ज़) तशरीफ़ लाए।

बेल्जियम की विभिन्न जमाअतों से आए हुए मर्द एवं औरतें और नैशनल आमिला के मेंबरों ने अपने प्यारे आक़ा का बड़ा जोश से भरपूर स्वागत किया। हर कोई अपने प्यारे आक़ा का दर्शन करके ख़ुशी तथा प्रसन्नता से भरा हुआ था और अपने आक़ा को मुबारकबाद दे रहा था।

मराक़श देश से सम्बन्ध रखने वाले एक बच्चे प्रिय अनीस बसाई ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में फूल प्रस्तुत किए जबकि प्रिया आयशा बुशरा ने हज़रत बेगम साहिब मद्दा ज़िल्लाह आली की सेवा में फूल प्रस्तुत किए।

जैसे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर तशरीफ़ लाए तो अमीर साहिब बेल्जियम डाक्टर इदरीस अहमद साहिब, मुबल्लिग़ इंचार्ज बेल्जियम हाफ़िज़ एहसान सिकन्दर साहिब और जनरल सेक्रेटरी जमाअत बेल्जियम असद मुजीब साहिब और सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया तौसीफ़ अहमद साहिब ने हुज़ूर अनवर को मुबारकबाद कहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ मिशन हाऊस के रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने 2 बजकर 45 मिनट पर तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए। प्रोग्राम के अनुसार 4 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा से बाहर तशरीफ़ लाए।

आदरणीय अमीर जमाअत अहमदिया जर्मनी अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहिब, मुबल्लिग़ इंचार्ज जर्मनी आदरणीय सदाकत अहमद साहिब,जनरल सेक्रेटरी आदरणीय इल्यास मजूका साहिब, आदरणीय डाक्टर अतहर ज़ुबैर साहिब, आदरणीय अब्दुल्लाह सपरा साहिब और आदरणीय सदर साहिब ख़ुद्दामुल अहमदिया ने अपनी ख़ुद्दाम की सेक्योरिटी टीम के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

जर्मनी से आने वाले ख़ुद्दाम की सेक्योरिटी टीम ने अपने प्यारे आक़ा के साथ ग्रुप तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ औरतों की तरफ़ तशरीफ़ ले गए। जहां औरतों ने दर्शन का सौभाग्य पाया। 4 बजकर 20 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सामूहिक दुआ करवाई।

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार यहां से फ्रांस की बंदरगाह Calais की तरफ़ रवानगी हुई और 6 बजकर 30 मिनट पर चैनल टनल (Channel Tunnel) आए। जर्मनी से साथ आने वाले लोगों और ख़ुद्दाम की सेक्योरिटी टीम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ को चैनल टनल तक छोड़ने और विदा करने और अलविदा कहने के लिए क़ाफ़ला के साथ ही रही। इसी तरह बेल्जियम से अमीर साहिब बेल्जियम,आदरणीय असद मुजीब साहिब मुबल्लिग़ सिल्सिला व जनरल सेक्रेटरी, आदरणीय हाफ़िज़ एहसान सिकन्दर साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज बेल्जियम, राजा अब्दुल लतीफ़ साहिब नेशनल सेक्रेटरी जायदाद, हामिद महमूद शाह साहिब भूतपूर्व अमीर जमाअत बेल्जियम, एक नौमुबाइन अरब इदरीस गरबूज़ साहिब और आदरणीय सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया तौसीफ़ अहमद साहिब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ को यहां से लंदन के लिए विदा करने के लिए क़ाफ़िला के साथ आए।

पासपोर्ट, इमीग्रेशन और अन्य दस्तावेज़ों की क्लीयरैंस के बाद 7 बजकर 15 मिनट पर क़ाफ़िला की गाड़ियां ट्रेन पर बोर्ड (board) हुईं और यह ट्रेन सात बज कर बीस मिन्ट पर Calais से बर्तानिया के समुद्री शहर Dover की तरफ़ रवाना हुई। लगभग 35 मिनट के सफ़र के बाद ट्रेन चैनल टनल पार करके Dover के निकट बर्तानिया में प्रवेश हुई और अपने विशेष स्टेशन पर रुकी। लगभग पाँच मिन्ट के ठहराव के बाद फ्रांस के समय के अनुसार आठ बजे और बर्तानिया समय के अनुसार सात बजे क़ाफ़िला की गाड़ियां ट्रेन से बाहर आईं और मोटर वे पर सफ़र शुरू हुआ। (बर्तानिया का समय फ्रांस के समय से एक घंटा पीछे है।)

आदरणीय रफ़ीक़ अहमद हयात साहिब अमीर जमाअत यू.के, आदरणीय अताउल मुजीब राशिद साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज यू.के, आदरणीय मिर्ज़ा नासिर इनाम साहिब प्रिंसिपल जामिया अहमदिया यू.के, आदरणीय मुबारक अहमद ज़फ़र साहिब ऐडीशनल वकीलुल माल लन्दन, आदरणीय अख़लाक़ अहमद अन्जुम साहिब दफ़्तर वकालत तब्शीर, लंदन आदरणीय अब्दुल क़ुद्दूस आरिफ़ साहिब सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया यू.के, आदरणीय नसीरुद्दीन हुमायूँ साहिब विभाग हिफ़ाज़त ख़ास सेक्योरिटी टीम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ को मुबारकबाद कहने के लिए मौजूद थे।

लगभग एक घंटा चालीस मिनट के सफ़र के बाद शाम 8 बजकर 40 मिनट पर इस्लामाबाद में पधारे। जहां जमाअत के लोग मर्द तथा औरतों की एक बड़ी संख्या ने अपने प्यारे आक़ा को अहलन व सहलन व मर्हबा कहते हुए मुबारकबाद कहा।

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हम ने यही कोशिश करनी है कि दुनिया को अल्लाह तआला की तौहीद और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे तले लाएंगे।

यही तहरीक जदीद का भी उद्देश्य है

इस वर्ष विश्व व्यापि जमाअत अहमदिया को तहरीक जदीद के माली निज़ाम में 14.5 मिलियन अर्थात एक करोड़ पैंतालीस लाख पाऊंड माली क़ुर्बानी पेश करने की तौफ़ीक़ मिली।

यह वसूली पिछले वर्ष के मुक़ाबले में आठ लाख बयासी हज़ार पाऊंड अधिक है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है मेरी ख़ुशी प्राप्त करने के लिए, मेरी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए ख़ालिस हो कर जब ख़र्च करोगे तो फिर मेरा वादा है कि मैं तुम्हारे ख़ौफ़ भी दूर करूँगा, तुम्हारे दुख भी दूर करूँगा।

तुम्हारे लिए दिल की शान्ति का सामान करूँगा, तुम्हें सांत्वना दूँगा, तुम्हें अपनी गोद में ले लूँगा।

क़ुर्बानियां अल्लाह तआला के पास स्वीकार होती हैं शर्त यह है कि इन क़ुर्बानियों का उद्देश्य अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति हो

तहरीक जदीद के छयासीवें वर्ष की सफलता और बरकतों वाले समापन और सत्तासीवें वर्ष का एलान।

इस वर्ष तहरीक जदीद के अधीन माली क़ुर्बानी करने वाले पहले दस देशों में जर्मनी, बर्तानिया, अमरीका, कैनेडा, फिर मध्य एशिया कोएक देश भारत, आस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, घाना और फिर मध्य एशिया का एक दूसरा देश शामिल हैं।

दुनिया भर में बसने वाले, विभिन्न क़ौमों से सम्बन्ध रखने वाले अहमदी पुरुष तथा औरतें और बच्चों तथा नौमुबाईन की अनुपमीय क़ुर्बानियों और उनके नतीजे में होने वाले इलाही फ़ज़्लों का वर्णन।

वर्तमान हालात में इस्लामी जगत और मुसलमानों के लिए दुआओं की तहरीक।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 6 नवम्बर 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَ النَّهَارِ سِرًّا وَّ عَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۲۷۵﴾ (अल-बकर: 275)

वे लोग जो अपने माल ख़र्च करते हैं रात को भी और दिन को भी, छुप कर भी और खुले आम भी, तो उनके लिए उनका बदला उनके रब के पास है और उन पर कोई ख़ौफ़ नहीं होगा और न वे दुख करेंगे।

क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला ने मोमिनों को विभिन्न जगह माली क़ुर्बानियों की तरफ़ ध्यान दिलाया है। इस आयत में भी हमने देखा कि मोमिनों की इस विशेषता का वर्णन फ़रमाया है कि मोमिन अल्लाह तआला की राह में रात-दिन ख़र्च करते रहते हैं और यह ख़र्च उनका छुपा कर भी होता है और दिखा कर भी होता है और अल्लाह तआला के निकट ये दोनों तरीक़े क़बूलीयत का दर्जा पाते हैं अर्थात छुपा हुआ ख़र्च भी और ज़ाहिर ख़र्च भी क्योंकि अल्लाह तआला ने दूसरी जगह फ़रमाया कि इन मोमिनों की अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करने की नीयत अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करना होती है जैसा कि फ़रमाता है وَ مَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ (अल-बकर: 273) अर्थात अल्लाह की प्रसन्नता के हुसूल के लिए वे ख़र्च करते हैं और अल्लाह की प्रसन्नता को पाने के अतिरिक्त कभी ख़र्च ही नहीं करते अर्थात उनका उद्देश्य ही अल्लाह तआला की प्रसन्नता होता है। अत: एक सच्चे मोमिन की यही निशानी है कि वह नेकियां करे। अल्लाह तआला की राह में अपने पवित्र माल से ख़र्च करे। दिन और रात नेकियां करने की चिन्ता हो। कभी ज़ाहिर करके नेकी करे, कभी छुपा कर नेकी करे। कभी ज़ाहिर तौर पर माली क़ुर्बानी करे, कभी छुपा कर माली क़ुर्बानी करे। ये क़ुर्बानियां अल्लाह तआला के यहाँ स्वीकार होती हैं शर्त यह है कि इन क़ुर्बानियों का उद्देश्य अल्लाह तआला की प्रसन्नता की प्राप्ति हो। यदि केवल दिखावे की क़ुर्बानियां हैं तो फिर ऐसी क़ुर्बानियां अल्लाह तआला के यहाँ स्वीकार होने का दर्जा नहीं पातीं। ये क़ुर्बानियां उन दिखावे की क़ुर्बानियां करने वालों के मुँह पर मारी जाती हैं। अत: यह है वह रूह जिस को सामने रखकर एक मोमिन को क़ुर्बानी करनी चाहिए और यह है वह रूह जिस को सामने रखते हुए जमाअत के लोग अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से माली क़ुर्बानियां करते हैं। यदि यह रूह नहीं तो हमारी क़ुर्बानियां बेफ़ाइदा हैं और व्यर्थ जाने वाली हैं यदि ये क़ुर्बानियां इस उद्देश्य के लिए हो रही हैं कि अमुक़ व्यक्ति ने इतनी क़ुर्बानी की है और मैं ने इस से अधिक क़ुर्बानी करनी है तो बेफ़ाइदा है या अमुक़ जमाअत या हलक़ा कहीं क़ुर्बानी में हम से अधिक बढ़ न जाए और फिर लोग हमें क्या कहेंगे। आगे बढ़ने की भावना बेशक अच्छी चीज़ है लेकिन यह चिन्ता कि लोग हमें क्या कहेंगे यह नहीं होनी चाहिए। यह होना चाहिए कि अल्लाह तआला की निगाह में हम उनसे अधिक क़ुर्बानी करने वाले ठहरें फिर तो यह आगे बढ़ने की रूह है। या इसलिए चंदा दे रहे हैं कि लोगों को गर्व से बताएं कि मैं ने इतना चंदा दिया है या कभी किसी मतभेद पर प्रबन्धकों को जतला ही दिया कि मैं इतनी माली क़ुर्बानी करने वाला हूँ मेरा हक़ बनता है कि मेरी अमुक़ बात मानी जाए या अमुक़ सुविधा मुझे उपलब्ध की जाए या किसी को यह ख़्याल आ जाए कि मैं इतनी माली क़ुर्बानी कर के वक़्त के ख़लीफ़ा या ओहदेदारों की नज़र में आ जाऊँगा और मेरी प्रशंसा होगी तो ये सब बातें ग़लत हैं, बेफ़ाइदा हैं, व्यर्थ हैं और क़ुर्बानी की भावना के ख़िलाफ़ हैं बल्कि उल्टा हानि का माध्यम बनती हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ये सब बातें ग़लत हैं, मेरे रास्ते में ख़र्च करना है तो फिर केवल और केवल एक उद्देश्य होना चाहिए कि मेरी प्रसन्नता प्राप्त करनी है। हाँ अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने वाले को अल्लाह तआला इज़्ज़त भी देता है लेकिन इज़्ज़त उसे विनमर्ता और विनय में और बढ़ाने वाली होनी चाहिए बल्कि इस बात पर उसे शर्मिंदगी होती है कि लोग मेरी प्रशंसा करें। समय के ख़लीफ़ा की नज़र में आने की यदि इच्छा होती है तो केवल इसलिए कि मेरे लिए वह दुआ करें और एक दृढ़ सम्बन्ध पैदा हो। जिस व्यक्ति की बैअत की हो क़ुदरती बात है इन्सान की इच्छा होती है कि उस की दुआओं से भी हिस्सा ले। यदि ख़िलाफ़त के सच्चे होने पर विश्वास है तो ऐसी इच्छा में कोई बुराई भी नहीं है लेकिन नीयत दिखावे की न हो बल्कि नीयत यही हो कि मैं ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करूँ और इस क़ुर्बानी के कारण से समय के ख़लीफ़ा मेरे लिए दुआ करें कि मैं ख़ुदा तआला के और निकट हो जाऊं और अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने वाला बनूं और मोमिनों की एक दूसरे के लिए दुआएं ही हैं जो एक दूसरे की रुहानी तरक़्क़ी का माध्यम बनती हैं। अत: यह सोच भी अल्लाह तआला की शिक्षा के अनुसार है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है मेरा प्रेम प्राप्त करने के लिए, मेरी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए, मेरी प्रसन्नता की प्राप्ति के हुसूल के लिए जब निष्कपट हो कर ख़र्च करोगे तो फिर मेरा वादा है कि मैं तुम्हारे ख़ौफ़ भी दूर करूँगा, तुम्हारे गम भी दूर करूँगा, तुम्हारे लिए हृदय की शांति पैदा करूँगा, तुम्हें सांत्वना दूँगा, तुम्हें अपनी गोद में ले लूँगा। यह सोच अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इस गिरोह की है जिसने इस ज़माने के इमाम मसीह मौऊद और महदी मऊद और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को माना है कि ख़ुदा तआला के दीन की ख़ातिर माली क़ुर्बानी करनी है और फिर अल्लाह तआला उस माली क़ुर्बानी को बिना फल लगाए नहीं छोड़ता। अल्लाह तआला की राह में ख़र्च तो इसलिए किया कि उसकी

प्रसन्नता प्राप्त हो लेकिन अल्लाह तआला ने कभी कभी साथ के साथ ही फल प्रदान किया कभी माल के रूप में कभी किसी और इनाम के रूप में और इस की उदाहरणें आए दिन हम जमाअत में देखते हैं। दस बीस या सैंकड़ों में नहीं बल्कि हज़ारों में ये उदाहरणें हैं बल्कि मैं कहूँगा कि लाखों में हैं जिन से अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने वाले गुज़रते हैं और अपने ऊपर लागू होते हुए देखते हैं। फिर उनके ईमान मज़बूत तरक़्क़ी करते हैं। निश्चय इन माली क़ुर्बानी करने वालों को यह भी याद रखना चाहिए कि उनकी पत्नी बच्चों का भी उन पर अधिकार हैं और ये अधिकार अदा करना भी एक मोमिन का कर्तव्य है। अपनी पत्नी बच्चों को हक़ से वंचित रखना, उनकी आवश्यकताओं को पूरा न करना भी गुनाह है लेकिन यह भी याद रखना चाहिए कि क़नाअत: (कम वस्तुओं पर संतुष्टि) पैदा करते हुए और अपने घर वालों को क़नाअत: की महत्वता बताते हुए और एहसास दिलाते हुए माली क़ुर्बानी की तरफ़ ध्यान भी देना चाहिए और माली कुर्बानी करवानी चाहिए और फिर ऐसे लोगों की औलादें अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के साथ ऐसे-ऐसे माध्यमों से अल्लाह तआला के फ़ज़्लों की वारिस बनती हैं कि इन्सान आश्चर्य चकित रह जाता है। इस वक़्त में कुछ क़ुर्बानी करने वालों पर क़ुर्बानियों के कारण से जो फ़ज़्ल हुए या अल्लाह तआला की ओर से माल ख़र्च करने की तहरीक हुई और फिर अल्लाह तआला ने उन्हें किस तरह नवाज़ा इसकी कुछ घटनाओं को प्रस्तुत करूँगा और ये घटनाएँ इसलिए भी कभी-कभी पेश करनी लाभदायक होती हैं कि इस से दूसरों को भी तहरीक पैदा होती है और कुछ लोग लिखते भी हैं कि इन घटनाओं ने हमें प्रभावित किया और हमें भी माली क़ुर्बानी की तहरीक पैदा हुई और फिर हम ने भी अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के नज़्ज़ारे देखे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन कहता है कि तुम ऐसा मत करो कि अपने समस्त कार्यों को लोगों से छुपाओ बल्कि तुम हसब-ए-मस्लिहत कुछ अपने पवित्र कार्य छुपा कर करो जब कि तुम देखो कि छुपा कर करना तुम्हारे नफ़्स के लिए बेहतर है और कुछ कर्म दिखा कर भी करो जब कि तुम देखो कि दिखलाने में आम लोगों की भलाई है। तुम्हें दो बदले मिलें और ताकि कमज़ोर लोग..... तुम्हारे अनुकरण से इस नेक कार्य को कर लें।' फ़रमाया कि "..... न केवल बातों से लोगों को समझाओ बल्कि कर्मो से भी तहरीक करो क्योंकि हर एक जगह बातें असर नहीं करती बल्कि अक्सर जगह उदाहरणों का बहुत प्रभाव होता है।" (कश्ती ए नूह, रुहानी ख़ज़ाएन भाग 19 पृष्ठ 31-32)

अत:: ये घटनाएँ जो मैं बताता हूँ या आज वर्णन करूँगा उनके बारे में लोग तो नहीं लिखते कि वर्णन करें बल्कि स्वयं वर्णन करता हूँ ताकि इन उदाहरणों का नेक प्रभाव लोगों पर हो बल्कि कुछ तो लिख देते हैं कि यदि बताना भी है तो हमारा नाम न लें। बहरहाल अब मैं कुछ घटनाएँ पेश करता हूँ। अल्लाह तआला करे कि ये घटनाएँ उन लोगों के लिए भी दोहरे पुन्य का कारण बने जिनके साथ ये घटनाएँ हुईं। एक सवाब तो यह है कि उन्होंने अल्लाह तआला के मार्ग में क़ुर्बानी की और एक यह कि उनकी उदाहरणों और घटनाओं के कारण से दूसरों को भी माली क़ुर्बानियां करने की तेहरीक पैदा हुई या होगी और माली क़ुर्बानी की समझ पैदा हुई या होगी।

बैअत करने के बाद अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए किस तरह माल को ख़र्च करने की तड़प होती है। जलसा सालाना 2020ई का जो समाप्ति भाषण था, जलसे का जो भाषण मैंने अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के ऊपर दिया था इस बारे में मुबल्लिग़ अल्बानिया समद साहिब लिखते हैं कि एक अल्बानियन दोस्त जाफ़र कूची साहिब यह ख़िताब सुन रहे थे और मैंने इस में उनकी अहमदियत की स्वीकार्यता का वर्णन भी किया था। मुबल्लिग़ सिल्सिला ये लिखते हैं कि अगस्त तक उनकी कोई आमदनी नहीं थी। एक दिन नमाज़ जुमा के बाद पूछने लगे कि दूसरे अहमदी लड़के जो चंदे देते हैं मुझे भी उनकी तफ़सील बताएं। इसलिए उन्हें फिर से चंदों का परिचय करवाया गया, पहले भी करवाया था। इसके बाद कहने लगे कि इसी माह उनका फ़्लैट किराय पर लगा है और उन्हें किराया वसूल हुआ है। इस पहली आय में से शत प्रतिशत से काफ़ी अधिक चंदा लेकर आए। अत: महोदय ने कहा कि जो दर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन फ़रमाई है उसकी अदायगी के बाद बाक़ी जो रक़म बचती है वह तहरीक जदीद और वक़्फ़ जदीद में डाल दें। कहते हैं मैंने उन्हें बताया कि अल्लाह तआला का क़ुरआन मजीद में वादा है कि वह माली क़ुर्बानी करने वालों को बढ़ा कर देता है तो वह कहने लगे कि मैंने इस नीयत से चंदा नहीं दिया। मैंने तो अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए चन्दा दिया है। इस नीयत से दिया है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह आदेश है कि धर्म के लिए माली क़ुर्बानियां भी करो और इस्लाम का यह हुक्म है कि धर्म के लिए माली क़ुर्बानी करनी चाहिए और अब यह बाक़ायदा प्रत्येक माह चंदा भी दिया करते हैं। तो इन दुनियादारों की यह सोच भी एक दम से बदल जाती है।

सरवर साहिब अर्जनटाइन के मुबल्लिग़ हैं वह लिखते हैं कि अर्जनटाइन में कोरोना वायरस और उमूमी इन्फ्लेशन (Inflation) की वजह से लोगों को सख़्त आर्थिक कठिनाइयों हैं लेकिन इसके अतिरिक्त नौमुबाईन को बताया गया कि अरकाने इस्लाम में से एक प्रमुख रुकन अल्लाह के मार्ग में धन देना भी है और जमाअत अहमदिया में इस इलाही आदेश पर कार्यरत होने के लिए एक शाख़ तहरीक जदीद की स्कीम भी है तो इस पर स्थानीय नौमुबाईन ने बढ़ चढ़ कर अपनी हैसियत के अनुसार क़ुर्बानियां पेश कीं। इसमें एक फ़ातिमा वीरोनीका (Fatima Veronica) साहिबा हैं उनको ग़ैरमामूली क़ुर्बानी की तौफ़ीक़ मिली। वह विधवा हैं। व्यवसाय की दृष्टि से उनकी मामूली सी तनख़्वाह है। जब सब नौमुबाईन को एक साथ तहरीक की गई कि वर्ष ख़त्म होने में थोड़े दिन रह गए हैं तो उन्होंने मुबल्लिग़ को, कहते हैं मुझे पैग़ाम भेजा कि अभी उनको सामर्थ्य नहीं है लेकिन यह अगले कुछ दिनों में कोशिश करेंगी कि कुछ रक़म जमा करवा दें। इसलिए कुछ दिनों बाद ही उन्हों ने पाँच हज़ार अर्जिंटीन पेसूज़ जमा करवा दिए। मुबल्लिग़ लिखते हैं, उनकी हेसियत के अनुसार बल्कि अर्जनटाइन के साधारणता आर्थिक अवस्था को देखते हुए यह ग़ैरमामूली रक़म थी। कहते हैं उनकी यह भावना देखकर मैंने उनको कहा कि मैं आप का बहुत अधिक शुक्रगुज़ार हूँ। इस पर कहने लगीं कि इस में शुक्रिया की क्या बात है। कहती हैं मैंने इस्लाम दिली ख़ुशी से स्वीकार किया है। इसको समझ कर क़बूल किया है और इसके आदेशों में से एक यह आदेश है कि धर्म के लिए क़ुर्बानियां की जाएं। मैं तो बल्कि शर्मिंदा हूँ कि अपने काम की वयस्तता के कारण से धर्म के लिए वक़्त की क़ुर्बानी इस तरह पेश नहीं कर सकती जैसा कि एक अहमदी मुस्लमान की ज़िम्मेदारी होनी चाहिए। यह इन्क़िलाब है जो मसीह मौऊद की जमाअत में कामिल वफ़ा के साथ शामिल होने वालों में अल्लाह तआला ने पैदा फ़रमाया है कि अल्लाह तआला की प्रसन्नता किस प्रकार प्राप्त करनी चाहिए। इसके लिए क्या प्रयास करने चाहिए और किस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को आगे बढ़ाना है।

इंडोनेशिया, दुनिया का एक और दूसरा किनारा, वहां द्वीप हैं। अमीर साहिब लिखते हैं कि टंगरींग (Tangerang) शहर की एक महिला मरसीला हैं। उन्होंने बताया कि कोरोना के कारण उनके पति की नौकरी चली गई। उन्होंने कारोबार शुरू किया परन्तु मुनाफ़ा लाभ नहीं हुआ। फिर ऑनलाइन मोटर साईकल टैक्सी में काम शुरू किया। इसमें भी वही मुश्किलात पेश आती रहीं यहां तक कि हालत यह हो गई कि सोचते थे कि अगले दिन के लिए खाने को कुछ मिलेगा भी कि नहीं। कहती हैं हमारी इच्छा थी कि रमज़ान में हम तहरीक जदीद के वादा को पूरा कर दें और मेरे पति, कहती हैं, मुझे केवल दुआ के लिए कहते थे दुआ करो कि वादा पूरा हो जाए। कहती हैं रमज़ान में मैंने स्वप्न में देखा कि एक व्यक्ति मुझे कह रहा है कि क्या तुमने कोई वादा किया हुआ है? मैंने उत्तर दिया कि हाँ। फिर उस व्यक्ति ने कहा कि इस वाअदे को पूरा करो। जब आँख खुली तो तहज्जुद का वक़्त था। तहज्जुद के बाद सहरी के वक़्त मैं ने ये स्वप्न अपने पति को बताया। कुछ दिन बाद मेरे पति जब घर आए तो बड़ी ख़ुशी से अत्यधिक रक़म देकर कहा कि जल्द से जल्द तहरीक जदीद का वादा पूरा करो। जब मेरे पति ऑनलाइन मोटर साईकल टैक्सी के काम का मुनाफ़ा जो पच्चास हज़ार इंडोनेशियन रुपय था, लेने के लिए बैंक में गए तो देखा कि उनके एकाऊंट में इस से बीस गुना अधिक रक़म मौजूद है। कहती हैं हमें नहीं मालूम कि ये पैसे कहाँ से आए लेकिन मुझे यक़ीन है कि यह केवल ख़ुदा तआला की सहायता थी जो उसने हमारी नीयत देखते हुए हम पर इनाम किया। इस तरह अल्लाह तआला सोचों और ग़मों से निकालता है।

अमीर साहिब इंडोनेशिया ही वर्णन करते हैं लामपोंग (Lampong) के एक गांव की अहमदी महिला नूर साहिबा हैं। वह रोज़ाना अपने पति के साथ किसी एलिमेंटरी स्कूल की दुकान में चीज़ें बेचती हैं। कहती हैं इस में अधिक मुनाफ़ा तो नहीं है लेकिन रोज़ की निश्चित रूप चंदा अदा करने के लिए काफ़ी है। यह प्रत्येक महीने बड़े शौक़ से चंदा दिया करती हैं। उन्होंने बताया कि कोरोना वायरस के कारण से दो महीने के लिए स्कूल बंद हो गए और आमदनी ख़त्म हो गई। बहुत परेशानी हुई कि चंदा कैसे दिया करेंगे। उनको ख़्याल आया कि उनके और उनके बेटे के पास एक मनी बॉक्स (Money box) है, बूगी है जिसमें उन्होंने पैसे जमा कर रखे हैं। इस में जमा करते रहते थे, डालते रहते थे। इस को तोड़ कर तहरीक जदीद

और वक़्फ़ जदीद के लिए दे देते हैं। उन्होंने बच्चों को माली क़ुर्बानी की महत्त्वता के बारे में समझाया और बच्चों की यह रक़म चंदे में दे दी। वह कहती हैं कि रमज़ान से पहले घर में केवल एक पियाला चावल बाक़ी थे जो दो बच्चों के लिए भी काफ़ी नहीं था। कहती हैं मैंने बच्चों के लिए नाशता बनाया। बच्चों ने चावल और पानी से नाशता किया। बच्चे पूछते थे कि आप क्यों हमारे साथ चावल नहीं खाते? थोड़े थे। माँ बाप ने क़ुर्बानी की तो मुस्कुराने के अतिरिक्त हमारा कोई उत्तर नहीं था। दोपहर का समय हो गया। फिर बच्चों को भूख लगी। थोड़े से चावल बच्चे थे। एक बच्चा ही खा सकता था दूसरे को भूख लगी वह रोने लगा। कहती हैं हम उस समय-दुआ के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सकते थे। नमाज़ पढ़ी और बहुत दुआएं कीं। कुछ ही देर बाद अल्लाह तआला की ओर से सहायता आई और कोई व्यक्ति आया जिसे अपने मकई के खेत में काम करवाने के लिए मज़दूर की निश्चित रूप से ज़रूरत थी। इस प्रकार मेरे पति को काम मिल गया और हमारी निश्चित रूप से ज़रूरत पूरी हो गई।

हाफ़िज़ अताउल-हलीम साहिब मुरब्बी सिल्सिला माली हैं वह लिखते हैं कि एक सत्तर वर्ष के वृद्ध अहमदी यातारा तरावड़े साहिब प्रत्येक महीने निरन्तरता से चंदा दिया करते हैं और निज़ामें वसीयत में भी शामिल हैं। यह चंदा अदा करने के लिए सात किलोमीटर कच्चा रस्ता साईकल पर तय कर के आते हैं। कुछ समय पूर्व उनकी ज़मीन पर साथ वाले गांव के चीफ़ ने क़ब्ज़ा कर लिया जिसके कारण से वह बहुत परेशान थे। उन्होंने मुझे भी यहां दुआ के लिए पत्र लिखा और बाक़ायदगी के साथ कुछ अधिक रक़म भी चंदे में देनी शुरू कर दी। अल्लाह तआला ने फ़ज़ल फ़रमाया और उसी जज ने जो पहले उनके ख़िलाफ़ निर्णय दे चुका था उसने उनके हक़ में निर्णय दे दिया। उनकी ज़मीन उनको वापस मिल गई जिस की कोई आशा नहीं थी क्योंकि गांव का चीफ़ बड़ा आदमी था और शक्तिशाली था और किसी के सोच में भी नहीं था कि जज चीफ़ के विरुद्ध निर्णय दे देगा। उन्होंने न केवल अपने गांव में बल्कि क्षेत्र में आकर मस्जिद में जुम्अ: की नमाज़ के बाद समस्त लोगों के सामने इस ख़ुदा की सहायता का वर्णन किया और जिससे दूसरे लोग भी बड़े प्रभावित हुए। इस तरह अल्लाह तआला ख़ौफ़ को भी अमन में बदलता है।

अमीर साहिब फ़्रांस लिखते हैं कि एक मित्र ने बताया कि मैंने इस वर्ष अपना तहरीक जदीद का वादा पिछले वर्ष की तुलना में दोगुना करके एक हज़ार यूरो लिखवाया था लेकिन संयोग ऐसा हुआ कि लॉक डाउन के कारण आमदनी बिल्कुल कम हो गई और देखने में संभव नहीं लग रहा था कि वादा पूरा होगा। मैंने कुछ क़र्ज़ भी लिया हुआ था और उसकी भी अदायगी करनी थी और हज़ार यूरो का वादा पूरा करना था जो बहुत मुश्किल लग रहा था। दुआ के अतिरिक्त कोई रस्ता नहीं था। दिल में यही था कि जो भी तनख़्वाह होगी चाहे खाऊं या न खाऊं कुछ भी हो जाए लेकिन मैंने अपना वादा निश्चित रूप से पूरा करना है। कहते हैं कि अल्लाह तआला ने केवल अपने फ़ज़ल और एहसान के साथ इसी हफ़्ते मुझे मेरे मालिक की ओर से लॉक डाउन के दौरान काम करने की वजह से बिल्कुल मेरे वादा के अनुसार एक हज़ार यूरो बोनस के तौर पर मिल गए। कहते हैं मैं समझता हूँ ख़ुदा तआला के समक्ष जो मैंने वादा किया था तो यह केवल अल्लाह तआला की ओर से मुझे मिला है अन्यथा मेरी सोच में भी नहीं था कि मेरा मालिक मुझे इस कठिन समय में इतना अधिक बोनस दे देगा।

लॉक डाउन का ज़िक्र आया तो बता दूं कि आज से फिर यहां चार हफ़्ते के लिए लॉक डाउन शुरू हुआ है। इसलिए आज मस्जिद में भी कोई नमाज़ी ख़ुत्बे में इस समय मेरे सामने नहीं है क्योंकि उन्होंने यही कहा है कि ख़ुतबा तो आप दे सकते हैं लेकिन सिवाए मुअज़्ज़न के और कोई न हो।

कैनेडा से एक सीरियन अहमदी ने मुझे लिखा और ये भी साथ लिखा कि यदि कहीं वर्णन करना ही पड़ जाए तो मेरा नाम न बताएं। कहते हैं कि इस्लामाबाद के नए मर्कज़ के बनने पर मुबारकबाद देते हुए मैंने वादा किया था कि तहरीक जदीद में मैं इस ख़ुशी में पाँच हज़ार कैनेडीयन डालर दिया करूँगा। उन्होंने पिछले वर्ष का वादा किया था। कहते हैं उन दिनों मेरी आमद चार हज़ार डालर माहाना थी और अच्छे हालात थे। कुछ माह बाद ही मैंने नई गाड़ी ख़रीद ली और जॉब भी बदल ली फिर आय बढ़ गई लेकिन फिर भी अच्छे हालात होने के अतिरिक्त इतनी सुविधा नहीं थी कि बहुत आसानी हो और मैं पाँच हज़ार वादा पूरा कर सकूँ क्योंकि मैं सीरिया अपने घर वालों को भी कुछ रक़म भेजता था और रोज़ाना दुआ करता था कि अल्लाह तआला मेरे चंदे की अदायगी का सामान कर दे। कहते हैं जनवरी 2020 ई में एक ऐक्सिडन्ट हो गया। एक माह-काम नहीं कर सका। प्रत्येक महीने खर्च के लिए फिर क़र्ज़ भी लेना पड़ गया। फिर कोरोना के कारण से माली हालात और ख़राब हो गए, लॉक डाउन हो गए यहाँ तक कि फरवरी, मार्च के महीनों में पति पत्नी अत्यधिक सस्ता खाना ख़रीद कर खाते थे और इस पर मजबूर थे। बड़ी कोशिश थी कि वर्ष ख़त्म होने से पूर्व यह वादा भी पूरा कर सकें। दुआ करते थे कि कम से कम वर्ष ख़त्म होने से पहले नहीं बल्कि रमज़ान में ही पूरी अदायगी कर दें लेकिन हमें ये स्वप्न लग रहा था। कहते हैं फिर मैंने टैक्सी का काम छोड़कर खाने की डिलीवरी का काम शुरू कर दिया। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हालात बेहतर होने लगे फिर हमने दुबारा इरादा किया और रमज़ान ख़त्म होने से पूर्व वादा पूरा करने का अह्द किया ताकि समय के ख़लीफ़ा से दुआएं भी ले सकें। फिर कहते हैं अपने काम का समय बढ़ा कर प्रतिदिन ग्यारह से बारह घंटे काम करने लगा। इसके बाद ऐसी-ऐसी जगहों से इन्कम आने लगी कि हमें कोई इल्म नहीं था और मेरी प्रत्येक महीने आमद नौ हज़ार डालर के क़रीब हो गई। कहते हैं इस तरह अल्लाह के फ़ज़ल से हमने रमज़ान के शुरू के दस दिन पूर्व ही वादा अदा कर दिया। यह भी लिखते हैं कि मुझे यक़ीन है कि यदि मेरा वादा इस से तीन गुना भी अधिक होता तो वर्ष ख़त्म होने से पहले मैं वादा निश्चित रूप से पूरा कर लेता। यह अपने ग़रीब रिश्तेदारों की सीरिया में सहायता भी करते हैं।

सीरालियोन के अमीर साहिब लिखते हैं कि वहां फ्री टाउन के उसमान साहिब हैं जो एक जमाअत के इमाम हैं। वह कहते हैं कि वैसे तो हम प्रत्येक वर्ष चंदा तहरीक जदीद में दिया करते हैं परन्तु इस वर्ष ख़्याल आया कि जो चंदा हम दिया करते हैं वह बहुत ही मामूली है। उन्होंने कहा कि मेरी कोई नोकोरी नहीं है। केवल एक छोटी सी दुकान है जो मैं और मेरी पत्नी चलाते हैं। इससे कोई ख़ास आमदनी भी नहीं होती केवल घर का मुश्किल से गुज़ारा होता है। बार-बार तहरीक जदीद के चंदे की अदायगी का ऐलान सुनते रहे। कहते हैं मेरी पत्नी ने कहा कि एक कैश बाक्स बनाते हैं और प्रतिदिन कुछ रक़म इस में डाल देंगे। अक्तूबर के अंत में जो कुछ इकट्ठा होगा वह तहरीक जदीद में अदायगी कर देंगे। पिछले वर्षों में हमने कभी भी बीस हज़ार लीवन से अधिक अदायगी नहीं की थी लेकिन इस वर्ष कहते हैं कि अल्लाह के फ़ज़ल से इस तरीक़े से हमने दो लाख लीवन से अधिक अदायगी की है। मेरे दूसरे दो भाईयों ने भी इस तरीक़े को प्रयोग किया और उन्होंने भी एक लाख तीस हज़ार लीवन की अदायगी की है। कहते हैं मेरी पत्नी खासतौर पर ऐसा करने से बहुत ख़ुश है कि अल्लाह तआला ने इस वर्ष हमें अच्छी माली क़ुर्बानी करने की तौफ़ीक़ अत: फ़रमाई और इस प्रकार करने से हमारी क़ुर्बानी का मयार भी बेहतर हुआ और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से आमदनी में भी इज़ाफ़ा हुआ और अब अल्लाह तआला ने जो तरीक़ा सिखाया है इसको हम जारी रखेंगे।

मार्शल आइलेंड अमरीका से भी परे एक और दूर दराज़ का इलाक़ा है। यहां के मुबल्लिग़ साजिद इक़बाल साहिब लिखते हैं कि मार्शल आइलेंड में एक नासिर केवशी राकन (Kioshi Rakin) साहिब हैं। इस वर्ष जब लोग जमाअत से तहरीक जदीद के वादे लिए जा रहे थे तो केवशी (Kioshi) साहिब कहने लगे कि मेरे पास तो कोई नौकरी नहीं है, रहने की जगह भी नहीं है। खाने पीने के लिए भी जमाअत के लंगर पर भरोसा है। इस पर हमने उनको कुछ समय के लिए मस्जिद में रहने के लिए जगह दे दी और साथ उन्हें कहा कि चाहे मामूली सी रक़म ही क्यों न हो आप कुछ न कुछ वादा लिखवा दें और दुआ करें कि अल्लाह तआला आपकी सहायता करे। इस पर उन्होंने दो अमरीकन डालर का वादा लिखवा दिया। कुछ माह के बाद ये मिशन आए और पच्चास डॉलरज़ तहरीक जदीद में पेश कर दिए। उन्होंने बताया कि अल्लाह तआला ने मेरी दुआओं को स्वीकार फ़र्मा लिया है। मुझे नौकरी भी मिल गई है और रहने के लिए अपार्टमेंट भी मिल गया है। अब वह अपने खाने पीने का प्रबन्ध भी स्वंय करने के योग्य हो गए हैं और ईमान की दृढ़ता के लिए देखें कि किस तरह अल्लाह तआला ऐसे तरीक़े से सहायता फ़रमाता है कि हमारे मुबल्लग़ीन भी कई बार हैरान रह जाते हैं।

अमीर जमाअत गेम्बिया लिखते हैं कि बस्से में तहरीक जदीद के हवाले से प्रोग्राम किया गया। वादों को अदा करने के हवाले से ध्यान दिलाया गया। इस प्रोग्राम में मूसा साहिब भी शामिल थे। उनके पास चंदे में देने के लिए कुछ भी नहीं था। बहुत बेचैन हुए और तहज्जुद में उठ-उठ कर ख़ुदा तआला के हुज़ूर उसका फ़ज़ल मांगते हुए झुकते कि वह इस योग्य हो सकें कि अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करने वालों में शामिल हों। अत:अल्लाह तआला ने उनकी दिली-ख़्वाहिश को क़बूल फ़रमाया। कुछ दिन ही गुज़रे थे कि यह जिस कंपनी के साथ कॉन्ट्रक्ट् पर काम करते थे उन्होंने कहा कि वो बसे में दो दिन का एक प्रोग्राम कर रहे हैं जिस में ये शामिल हों तो मुआवज़ा के तौर पर चार हज़ार डलासी दिए जाऐंगे। यह बहुत ख़ुश हुए और दो

दिन के प्रोग्राम में शामिल होने के बाद अपने वाअदे को बढ़ा कर दो हज़ार डलासी कर दिया। चंदे की अदायगी के लिए अल्लाह तआला ने उनकी आमदनी के और माध्यम पैदा फ़रमा दिए। दूसरे अहमदी भाईयों को भी तहरीक जदीद की एहमीयत और माली क़ुर्बानी की तहरीक करते रहते हैं।

तलहा अली साहिब फ़िलपाइन के सदर जमाअत हैं, मुरब्बी भी हैं। कहते हैं कि फ़िलपाइन की पुरानी जमाअतों में से एक सेम्योंल जमाअत है। यहां अधिकतर लोग अध्यापक के पेशे से जुड़े हुए हैं। इस जमाअत के सदर साहिब ने अपने टार्गेट से बढ़कर वसूली के बाद विनीत को मैसिज (Message) करके कहा कि तीन अध्यापकों को विशेषता दुआओं में याद रखें क्योंकि उन्हें मार्च से तनख़्वाह नहीं मिली परन्तु इसके अतिरिक्त तीनों ने तहरीक जदीद में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया है। क़ुर्बानी करके भी अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अब देखें कि दूर दराज़ इलाक़ों में बैठे हुए लोग भी किस तरह क़ुर्बानी करते हैं।

कबाबीर से शम्सुद्दीन साहिब मुबल्लिग़ लिखते हैं कि उल-ख़लील फिलिस्तीन में नई जमाअत है। यहां अक्सर लोग की जमाअत की माली हालत बहुत कमज़ोर है परन्तु अल्लाह के फ़ज़ल से सब ने तहरीक जदीद में हिस्सा लिया। इबराहीम साहिब उल-ख़लील के एक नोमुबाईन अहमदी हैं। मोहदय बैअत करते ही माली क़ुर्बानी में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते रहे। इस बार एक अच्छी रक़म उन्होंने तहरीक जदीद के लिए दी है। यह महोदय कहते हैं कि एक दोस्त मेरा क़र्ज़दार था जो किसी मजबूरी के कारण क़र्ज़ वापस नहीं कर रहा था। काफ़ी वक़्त प्रतीक्षा करता रहा। अब चूँकि तहरीक जदीद का चंदा मेरे ज़िम्मे है, कुछ माली मुश्किलात भी हैं, जो रक़म मिलने वाली है उसकी आशा भी नहीं रही। बहरहाल जब अमीर साहिब से मुलाक़ात हुई तो कुछ प्रबन्ध करके मैंने चंदा तहरीक जदीद में दिया। मेरी हालत को समझने के बाद अमीर साहिब ने कहा कि अब तो आप तहरीक जदीद का चंदा अल्लाह के मार्ग में अदा कर चुके हैं तो फिर अल्लाह निश्चित रूप से बरकत देगा। अत: अमीर साहिब के निकलने के कुछ घंटे बाद ही मेरे क़र्ज़दार ने मुझे पैसे वापिस किए और मेरी समस्त परेशानियाँ दूर हो गईं।

वेज़ बादिन (Wiesbaden)जर्मनी से एक दोस्त दफ़्तर तहरीक जदीद में तशरीफ़ लाए और बताया कि मेरा असाइल्म केस एक ऐसे जज के पास है जो केस मंज़ूर नहीं करता था। तहरीक जदीद के हवाले से प्रोग्राम में ईमान अफ़रोज़ वाक़ियात सुने। यह सुनकर मैंने इरादा किया कि एक हज़ार यूरो तहरीक जदीद में दिया करूँगा। अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि मेरा केस इस जज से एक दूसरे जज के पास चला गया और अल्लाह के फ़ज़ल से केस मंज़ूर हो गया। अब अल्लाह तआला से किया हुआ वादा पूरा करने आया हूँ। अत: उन्होंने अपनी मांगी गई रक़म जो वाअदे वाली रक़म थी वह दे दी।

सेक्रेटरी तहरीक जदीद यूके कहते हैं ब्रिटेन जमाअत के एक दोस्त के पास काम न था। तहरीक जदीद का चंदा अदा करने से अगले दिन ही उसको मुनासिब काम मिल गया। ब्रिटेन जमाअत के एक और दोस्त को माली परेशानी थी फिर भी चंदा तहरीक जदीद में अदा कर दिया। अत: कुछ समय बाद उन्हें HMRC, टैक्स डिपार्टमेंट की ओर से पत्र प्राप्त हुआ कि तुम्हारी पिछले वर्ष अधिक अदायगी हुई थी। यह रक़म उनके चन्दे की रक़म से कहीं अधिक थी। एक प्रोफेशनल दोस्त को काम पर परेशानी थी। किसी ने उक की व्यर्थ में शिकायत कर दी थी। उसने अपना तहरीक जदीद का चंदा अदा कर दिया। उल्टा वह व्यक्ति जिसने शिकायत की थी उसको फ़ारिग़ कर दिया गया। एक दोस्त की कार गढ़े में गिर गई। उसने सोचा कि यदि यह सलामत बाहर आ गई तो और अधिक चंदा तहरीक जदीद में अदा करूँगा। अत: गाड़ी बिना नुक़्सान के बाहर आ गई। उन्होंने एक हफ़्ता की आमदनी के अनुसार चंदा तहरीक जदीद अदा कर दिया। एक तिफ़्ल ने अपना छ: माह का जेब ख़र्च तहरीक जदीद में अदा कर दिया। बच्चे भी माली क़ुर्बानियों में बढ़ने की कोशिश करते हैं। एक ख़ादिम ने छुट्टीयों पर जाने के लिए रक़म बचा के रखी हुई थी यह समस्त रक़म तहरीक जदीद के चंदे में अदा कर दी। बारकिंग (Barking) और डेगनहम (Dagenham)के सदर जमाअत कहते हैं कि इस बार हमने तहरीक जदीद का टार्गेट निश्चित रूप से पूरा करना है चाहे अपनी जेब से अधिक अदा करना पड़े। अत: जो टार्गेट कम रह गया था वह उन्होंने अपनी ओर से अदा कर दिया। इसके बाद उन्हें अपनी जॉब की तरफ़ से सूचना मिली कि उन्हें पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष सत्तर प्रतिशत अधिक बोनस मिलेगा जो रक़म उन्होंने इज़ाफ़ी तौर पर चंदे में अदा की थी यह बोनस की रक़म इस से कहीं अधिक थी।

काज़किसतान से लेनार अब्दुल रहमानोफ़ कहते हैं मैं बाक़ायदगी से चंदा आम,जलसा सालाना,तहरीक जदीद और वक़्फ़-ए-जदीद दिया करता हूँ। ये विभिन्न क़ौमों के विभिन्न लोग हैं। और उन चन्दों की यह बरकत है कि मेरी पत्नी ने मेडीकल कॉलेज ख़त्म कर के हुकूमत के प्रोग्राम में नौकरी प्राप्त की और हुकूमत ने बच्चों की रिहायश के लिए क़र्ज़ प्रदान किया और बच्चे नर्सरी में पढ़ रहे हैं और अब माली हालात पहले से बहुत बेहतर हो गए हैं। मेरे पास दो गाड़ियां हैं और अब मैं ज़ाती मकान बनाने का इरादा रखता हूँ। ये सब अल्लाह तआला का फ़ज़ल और चंदा अदा करने का नतीजा है। पहले हम किराय के फ़्लैट में रहते थे। आर्थिक कठिनाइयां थीं लेकिन फिर भी हम चंदा देते रहे जिस के नतीजे में अल्लाह तआला ने हम पर बेहद फ़ज़ल फ़रमाया।

पिछले वर्ष जब तहरीक जदीद का मैंने ऐलान किया है तो गिनी बसाऊ के मुरब्बी मुहम्मद अहसन साहिब लिखते हैं कि एक अहमदी दोस्त मुहम्मद इब्राहीम साहिब कहते हैं कि उस रोज़ ऐलान सुन के, ख़ुत्बा सुन के, उन्होंने अपना वादा लिखवा दिया और इरादा किया कि प्रत्येक महीने चंदा दिया करता रहूँगा। अत: ऐसा ही होता रहा लेकिन कोरोना वबा के दिनों में आमदनी बंद हो गई। कहते हैं कि उस समय परेशानी हुई फिर जब तहरीक जदीद के वर्ष का अंत क़रीब पहुंचा तो परेशानी और बढ़ गई। कहते हैं मैं दुआ करता रहा। एक सुबह किसी साहिब की ओर से फ़ोन आया। उसने पूछा कि क्या आप तामीराती ब्लॉक्स बना सकते हैं? मैंने तुरंत हामी भर ली। अत: घर बैठे-बैठे काम मिल गया और इस की वजह से अल्लाह तआला ने अपना वादा पूरा करने का माध्यम पैदा फ़रमा दिया और लॉक डाउन की वजह से जो माली तंगी पैदा हुई थी वह भी दूर हो गई। इबराहीम साहिब कहते हैं ये समस्त बरकात समय के ख़लीफ़ा की आवाज़ पर लब्बैक कहने के कारण से हैं।

तंज़ानिया के अमीर साहिब लिखते हैं कि ज़ंजिबार से मुबल्लिग़ सिल्सिला लिखते हैं कि एक बुज़ुर्ग अहमदी महिल आमना बी-बी साहिबा हर वर्ष अपनी सीमित आय के अतिरिक्त चंदों की अदायगी में सबसे आगे रहती थीं। इस वर्ष भी जब रमज़ान उल-मुबारक में माली क़ुर्बानी की तहरीक की गई तो उन्होंने हर संभव कोशिश की कि इसी महीने में अपना वादा मुकम्मल कर दें लेकिन कुछ माली मुश्किलात के कारण से उनके पास रक़म न हो सकी। उन्होंने बताया कि एक दिन मुझे इस बात का इतनी शिद्दत से एहसास हुआ कि मैं रात को उठ गई और ख़ुदा तआला के हुज़ूर गिड़गिड़ा कर दुआ की कि ख़लीफ़ा की तहरीक पर लब्बैक कहने का वक़्त है और में इससे वंचित रही जाती हूँ। अत: उसी दिन सुबह उनके एक अज़ीज़ का टेलीफ़ोन आया जिससे एक समय से सम्पर्क नहीं हो रहा था। उनके अज़ीज़ ने अपनी ओर से कुछ रक़म भेंट के रूप भिजवाई जिससे उन्होंने अपना चंदा अदा कर दिया। वह स्वयं बताती हैं कि चंदा अदा करने की वजह से हमेशा मेरा ख़ुदा मेरे साथ प्यार का व्यवहार रखता है और कभी अकेला नहीं छोड़ता।

क़ादियान से वकीलुल्माल साहिब लिखते हैं केरल की जमाअत केरोलाई के एक दोस्त का तहरीक जदीद का चंदा पाँच लाख रुपए है। उन्होंने कुछ रक़म अपनी फ़र्म के फ़र्नीचर की ख़रीदारी के लिए रखी हुई थी और वक़्त पर रक़म अदा न करने की अवस्था में फ़र्म का काम रोकना पड़ना था लेकिन उसी वक़्त चंदा तहरीक जदीद की अदायगी का भी मुतालिबा था। उन्होंने चंदे के महत्व के सम्मुख वह रक़म चंदे में अदा कर दी। इस नियत क पवित्रता के कारण से अल्लाह तआला ने ऐसा फ़ज़ल फ़रमाया कि थोड़ी देर में चंदे में पेश की गई रक़म से कई गुना अधिक रक़म उनके एकाऊंट में किसी की ओर से जमा हो गई और फ़र्म के लिए जो सामान मुहय्या किया जाना था वह मंगवा लिया। इसके बाद महोदय को बहुत बड़ी रक़म का, कई मिलियन रुपए का प्रोजेक्ट मिला और अपने वादा के अतिरिक्त एक बड़ी रक़म लगभग बारह लाख रुपए तहरीक जदीद के लिए पेश किए।

फिर इंडिया से ही अब्दुल बासित साहिब इन्सपेक्टर लिखते हैं कि केरल की एक जमाअत "कोचीन" में तहरीक जदीद के हवाले से जलसा आयोजित किया गया जिसमें तहरीक जदीद के स्थापना और उद्देश्य के बारे में वर्णन किया गया। जमाअत के लोगों को तहरीक जदीद की माली क़ुर्बानी में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने की तलक़ीन की गई। जलसा के ख़त्म होने के बाद हम सदर साहिब के घर गए तो सदर साहिब की बेटी जिस की उम्र आठ वर्ष है वह अपना मनी बॉक्स ले कर आ गई कि मौलवी-साहब इसमें जितनी भी रक़म है वह चंदा तहरीक जदीद में जमा कर लें। उस वक़्त उसके बॉक्स में लगभग आठ सौ चौंसठ रुपए थे जो बच्ची ने चंदा तहरीक जदीद के लिए पेश किए। उसके पिता ने बताया कि उनकी बेटी एक समय से यह रक़म चंदा तहरीक जदीद में देने की नीयत से ही जमा कर रही थी। बाप ने कहा जब में अपनी दुकान से वापस आता तो मेरी जेब में जो भी सिक्के होते वह मुझ से लेकर जमा कर लेती। कहती वे सिक्के मुझे दे दें। और अपने बूगी में डाल लेती। इस तरह इस बच्ची ने कई महीनों से जमा की हुई रक़म चंदे में अदा कर दी। यह सोच

है माली क़ुर्बानी की जो अहमदी बच्चों में भी अल्लाह तआला ने पैदा फ़रमा दी है।

बैअत करने के बाद किस प्रकार क़ुर्बानी की फ़िक्र होती है समद साहिब अल्बानिया से लिखते हैं कि अल्बानिया के एक गांव में रहने वाले दलीप जर्जी (Dalip Gjergji) साहिब यह लोकल अहमदी हैं। एक दिन जुमा के बाद मिले। यह पेंशनर हैं और मामूली आय के अतिरिक्त प्रत्येक महीने बाक़ायदगी से चंदा दिया करते हैं। उनके पास अपनी गाड़ी भी नहीं थी। पब्लिक ट्रांसपोर्ट पर जुमा पर आते थे और फैली हुई बीमारी की वजह से काफ़ी समय बाद जुमा पर आए। जुमे के बाद कहने लगे कि दिल पर बोझ सा था कि इतने महीनों से चंदा अदा नहीं किया। यह अपने साथ आठ माह का चंदा लाए हुए थे और चंदा आम के अतिरिक्त तहरीक जदीद और वक़्फ़ जदीद का चंदा भी अदा किया। इस तरह और बेशुमार उदाहरण हैं उदाहरणता तन्ज़ानिया से एक मुअल्लिम हुसैन साहिब लिखते हैं कि एक मुख़लिस अहमदी सालेह मिटूँगा साहिब हैं। बढ़ चढ़ कर दिल्ली ख़ुशी से माली क़ुर्बानी में हिस्सा लेते हैं। कुछ समय पूर्व बीमार हो गए। ईलाज के लिए उनके पास पैसे नहीं थे। महीने के अंत पर जब उनको पेंशन के पैसे मिले तो उन्होंने सबसे पहले अपने तहरीक जदीद के वादे को मुकम्मल किया। कहते हैं मैंने उनको समझाने की कोशिश की। आप इस रक़म से पहले अपना ईलाज करवाएं फिर अपना वादा मुकम्मल करलें लेकिन उन्होंने कहा ख़ुदा तआला की ज़ात शिफ़ा प्रदान करने वाली है। इसलिए पहले में अपना ख़ुदा से किया हुआ वादा पूरा करूँगा फिर अपना ईलाज करवाऊँगा। क़ुर्बानी के भी ये अजीब मापदंण्ड हैं कि आश्चर्य होता है। इन नए अहमदियों पर भी जो शामिल हुए हैं किस तरह अल्लाह तआला ने दूर दराज़ इलाक़ों में ये एहमीयत स्पष्ट कर दी है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर उन लोगों में एक इन्कलाब पैदा कर दिया है।

गेम्बया के अमीर साहिब लिखते हैं एक इलाक़े में तहरीक जदीद के मुतालिबात के हवाले से प्रोग्राम किया गया। इस्लाम के लिए जीवन वक़्फ़ करने, सादा जीवन अपनाने और छोटे से छोटे काम में लज्जा न करने के हवाले से ध्यान दिलाया गया। अत: इस प्रोग्राम के बाद एक दोस्त इबराहीम साहिब ने बताया कि वह एक हज़ार डलासी चंदा तहरीक जदीद में पेश कर रहे हैं। और यह भी बताया कि वह अपने इकलौते बेटे को, उनका इकलौता बेटा है, उसको जीवन वक़्फ़ करके मुरब्बी सिल्सिला बनने के लिए भिजवाएं गे। अब यह बेटा सेकण्डरी स्कूल में है तो यह उनकी नीयत है कि इंशा अल्लाह तआला ये मुरब्बी बने।

घाना से आदम साहिब जनरल सेक्रेटरी इकरा ज़ोन लिखते हैं कि मुझे ज़ोनल सदर साहिब ने पच्चास घाना से-डी की रक़म बतौर किराया दी। मैंने ये रक़म चंदा तहरीक जदीद में अदा कर दी। अगली सुबह अफ़्सर के साथ किसी काम के लिए गया। वापस आने लगा तो अफ़्सर ने पूछा कि वापस किस तरह जाओगे? मैंने कहा टैक्सी पर जाऊँगा। इस पर अफ़्सर ने मुझसे मेरा फ़ोन मांगा और कहने लगा अपना फ़ोन चैक करो। कहते हैं मैंने चैक किया तो एक हज़ार से-डी उन्होंने मुझे मोबाइल के ज़रीया से वहां भेजा हुआ था। पच्चास से-डी मैंने दी तो हज़ार से-डी मिली। ये तो कुछ घटनाएं हैं जो मैंने वर्णन किए हैं। और बेशुमार ऐसे घटनाएं मेरे पास हैं। अल्लाह तआला इन क़ुर्बानी करने वालों के जीवन और धन में बे-इंतिहा बरकत डाले।

अब ये जो क़ुर्बानी हुई, मुकम्मल कुल कितनी हुई? इसकी तफ़सील भी थोड़ी सी वर्णन कर देता हूँ जैसा कि तहरीक जदीद के ऐलान के साथ वर्णन होता है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से तहरीक जदीद का 86 वां वर्ष 31 अक्तूबर को ख़त्म हुआ और 87 वां वर्ष शुरू हो गया और अल्लाह के फ़ज़ल से इस वर्ष जमाअत अहमदिया विश्वव्यापी को तहरीक जदीद के माली निज़ाम में 14.5 मिलियन यानी एक करोड़ पैंतालीस लाख पाऊंड माली क़ुर्बानी पेश करने की तौफ़ीक़ मिली। यह वसूली पिछले वर्ष के मुक़ाबले में आठ लाख बयासी हज़ार पाऊंड अधिक है। इस वर्ष दुनिया भर की जमाअतों में जर्मनी प्रथम स्थान पर रहा है। पाकिस्तान के आर्थिक, राजनीतिक हालात ख़राब से ख़राब होते जा रहे हैं लेकिन पाकिस्तान की जमाअतों ने जबकि दुनिया की जमाअतों के मुक़ाबले में तो नहीं लेकिन उमूमी तौर पर अपने देश के अनुसार अपनी स्थानीय करंसी में बहुत अधिक तरक़्क़ी की है और क़ुर्बानी पेश की है। अल्लाह तआला इन समस्त देशों में भी अमन और सुकून पैदा करे और बेहतरी पैदा करे जहां आर्थिक और स्यासी हालात ख़राब हैं ताकि इन लोगों को भी बढ़ चढ़ कर क़ुर्बानियां देने की तौफ़ीक़ मिले। बहरहाल सामूहिक तौर पर जो स्थिति है वह यह है कि बाहर के देशों में से पहला नम्बर जर्मनी का है। फिर लन्दन का है। फिर अमरीका का है। पाकिस्तान का भी बीच में आ जाता है। अमरीका नंबर तीन, फिर कैनेडा, फिर मिडल ईस्ट का एक देश है, फिर भारत है, फिर आस्ट्रेलिया है, फिर इंडोनेशिया है, फिर घाना है और फिर एक और मिडल ईस्ट की जमाअते हैं। घाना भी अब अफ़्रीक़ा के मुक़ाबला से बाहर निकल के दुनिया के मुक़ाबला पर माली क़ुर्बानी में शामिल हो गया है जो अब अमरीका और यूरोप और दूसरे देशों से मुक़ाबला करता है।

इसी तरह प्रति व्यक्ति अदायगी के दृष्टि से स्विटज़रलेंड पहले नंबर पर है, फिर अमरीका है, फिर सिंगापुर है। तीन जमाअतों में ये हैं। बाक़ी भी है। बाक़ी विस्तार बाद में।

अफ़्रीकन देशों में सामूहिक वसूली की दृष्टि से पहली जमाअतें ये हैं। पहले नंबर पर घाना है, फिर नाईजीरिया है, फिर बुरकीनाफासो है, फिर तनज़ानिया है, फिर गेम्बिया है, फिर सिरालियोन है। यहां सिरालियोन जमाअत काफ़ी बड़ी और पुरानी जमाअत है। उनके अमीर साहिब को और सम्बन्धित उहदेदारों को कोशिश करनी चाहिए कि यदि सही तरह माली क़ुर्बानी का जमाअत के लोगों को एहसास दिलाएँ तो जमाअत के लोग तो क़ुर्बानियां करने को तैयार हैं। उनको ध्यान देना चाहिए। फिर बेनिन है। बेनिन में भी अल्लाह के फ़ज़ल से बड़ी कोशिश हुई है। नाईजेरिया और बेनिन में फी कस अदायगी में बहुत अधिक बढ़ोतरी हुई है। बेनिन में प्रति व्यक्ति अदायगी में स्थानीय करंसी के दृष्टि से छ: गुना बढ़ोतरी हुई है और नाईजेरिया में आठ गुना बढ़ोतरी हुई है इसके अतिरिक्त हालात के कारण से उनकी जो शामिल होने वालों की संख्या वह कम थी लेकिन एक साथ रक़म पिछले वर्ष से अधिक या इतनी हो गई। शामिल होने वालों की एक साथ संख्या सोला लाख आठ सौ है और इस में जो वर्णन करने योग्य अफ़्रीकन देशों हैं जिनमें पिछले वर्ष के सम्बन्ध में जो बढ़ोतरी हुई है उनमें नंबर एक घाना है, फिर बोकीनाफासो है, फिर माली है, फिर सेनेगाल है, फिर गेम्बया है, कांगो किंशासा है, तनज़ानिया है, लाइबेरिया है, कीनिया है, सेंट्रल अफ़्रीक़ा है, साओतोमे है, कांगो बराज़ावेल है और ज़िम्बावे है। बाक़ी दूसरी बड़ी जमाअतों में बंगला देश, जर्मनी, कैनेडा, भारत, आस्ट्रेलिया और बर्तानिया के शामिल होने वालों में भी काफ़ी बढ़ोतरी हुई है।

दफ़्तर अव्वल के खाते अल्लाह तआला के फ़ज़ल से पाँच हज़ार नोसौ सत्ताईस अफ़राद के हैं जिनमें से तेंतीस जीवित हैं और वे अपने चंदे स्वयं अदा कर रहे हैं और तीन हज़ार एक सौ उन्नीस खाते उनके विरसा के द्वारा से जारी हैं। बाक़ी दो हज़ार सात सौ पचहत्तर खाते मुख़लेसीन जमाअत की ओर से जारी हैं।

जर्मनी क्योंकि सामूहिक तौर पर सारी दुनिया में प्रथम स्थान पर है इसलिए नंबर एक पे जर्मनी का ही जायज़ा पेश किया जाएगा। जर्मनी की पहली दस जमाअतें जो हैं उनमें महदी आबाद (Mehdi-Abad) नम्बर एक, फिर रोइड्र मार्क(Rdermark), नयोस (Neuss), नेदा (Nidda), कोलोन (Kln), पिनेबर्ग (Pinneberg), ओसनाब्रूक (Osnabrck), फ्लोलरज़हाइम (Flrsheim), कील(Kiel), फ़राइंज़हाइम(Freinsheim)है।और लोकल इमारतें जो हैं उनमें हैमबर्ग (Hamburg), डटसनबच(Dietzenbach), फ्रैंकफ़र्ट (Frankfurt), ग्रोस-गैराओ(Gross-Gerau), वेज़बादिन (Wiesbaden), मरफ़लडन(Mrfelden), मनहाइम (Mannheim), रीडशटड (Riedstadt), रोसलज़हायम (Rsselsheim), डामशटड (Darmstadt) हैं।

इसके बाद फिर नम्बर दो पर बर्तानिया है तो बर्तानिया की जमाअतों की पोज़ीशन यह है। बेअतुल-फुतुह क्षेत्र नम्बर एक पर है। मस्जिद फ़ज़ल क्षेत्र, इस्लामाबाद क्षेत्र, फिर मिडलेंडज़ (Midlands) क्षेत्र और बैयतुल अल-अहसान क्षेत्र। सामूहिक अदायगी के दृष्टि से बर्तानिया की पहली दस बड़ी जमाअतें आलडरशाट (Aldershot), इस्लामाबाद, फिर मस्जिद फ़ज़ल, फिर वोस्टर पार्क (Worcester Park), फिर बर्मिंघम साउथ (Birmingham South), जलंघम (Gillingham), पटनी (Putney), साउथ चीम (South Cheam), बर्मिंघम वैस्ट (Birmingham West), और चेम (Cheam), हैं। सामूहिक अदायगी के दृष्टि से बर्तानिया की पाँच छोटी जमाअतें स्पिन वैली (Spen Valley), कैथली (Keighley), सवानज़ी (Swansea), नॉर्थ वेल्ज़ (Noth Wales), नॉर्थ हैंपटन (Northampton) हैं ।

इसके बाद सामूहिक वसूली के दृष्टि से यह अमरीका आ गया लेकिन मेरा ख़्याल है पहले पाकिस्तान का वर्णन कर दूं। पाकिस्तान में जो जमाअतों का मुवाज़ना है वह यह है कि लाहौर नम्बर एक पर, रब्वा दूसरे नंबर पर, कराची तीसरे नंबर पर है। ज़िला की सतह पर जो अधिक क़ुर्बानी करने वाले दस ज़िले हैं उनमें

इस्लामाबाद, फिर स्यालकोट, फिर गुजरात, फिर गुजरांवाला, हैदराबाद, मीरपुर ख़ास, फैसलाबाद, टोबा टेक सिंह, उम्रकोट, चकवाल कोटली है। चकवाल अलग होना चाहिए। कोटली अलग होना चाहिए। पता नहीं इकट्ठा क्यों लिख दिया है। या दोनों एक ही पोज़ीशन में हैं।

वसूली की दृष्टि से अधिक क़ुर्बानी करने वाली पाकिस्तान की जो शहरी जमाअतें हैं वह इमारत डीफ़ैंस लाहौर, इमारत शहर रावलपिंडी, इमारत ड्रिग रोड कराची, इमारत मुग़ल पूरा लाहौर, इमारत टाउन शिप लाहौर, इमारत अज़ीज़ाबाद कराची, इमारत गुलशन इक़बाल कराची, पिशावर, कोइटा, इमारत दिल्ली गेट लाहौर हैं।

अमरीका की जो जमाअतें हैं उनमें मेरी लैंड(Maryland) पहले नंबर पर है, फिर लास एंजलेस (Los Angeles) है, सिलीकोन वैली (Silicon Valley) है, फिर सेंट्रल वर्जीनिया (Central Virginia) है, सयाटिल (Seattle) है, अवश्कोष (Oshkosh) है, फिर डेट्रॉइट (Detroit) है, फिर शिकागो (Chicago) है, साउथ वर्जीनिया (South Virginia) है, हीवसटन (Houston) है, अटलांटा है (Atlanta) और बोस्टन (Boston) है।

सामूहिक वसूली के दृष्टि से कैनेडा की लोकल इमारात में से वूहान (Vaughan) है, फिर पीस विलेज (Peace Village) है, फिर कैलगरी (Calgary) है, फिर वेनकोवर (Vancouver) है, टोरांटो वैस्ट (Toronto West) है, मिसीसागा (Mississauga) है, बराम्पटन (Brampton) है, बराम्पटन ईस्ट (Brampton East) है, फिर ससकॉटून (Saskatoon) है, फिर टोरांटो (Toronto) है। कैनेडा की छोटी जमाअतों में ब्रैडफोर्ड (Bradford) हैमिल्टन माओंटेन (Hamilton Mountain) ऐड मिन्टन वैस्ट (Edmonton West) और रजायना (Regina) और हैमिल्टन ईस्ट (Hamilton East) हैं।

फिर क़ुर्बानी की दृष्टि से इंडिया की पहली दस जमाअतें जो हैं इसमें कोयम्बटूर (Coimbatore) नंबर एक पर है, फिर करोलाई (Karulai) फिर क़ादियान (Qadian) फिर पत्तापिरयम (Pathapiriyam) फिर हैदराबाद (Hyderabad) कुन्नूर टाउन (Kinanoor Town), कोलकता (Kolkata), कालीकट (Calicut), बैंगलौर (Bangalore), माथोटम (Mathathum)पहले दस जो प्रान्त हैं उनमें केराला (Kerala) नंबर एक पे है, फिर तामिलनाडू (Tamil Nadu) फिर कर्नाटक (Carnatic) फिर जम्मू व कशमीर (Jammu Kashmir) फिर तेलंगाना (Telangana) पंजाब (Punjab), उड़ीसा (Odissa) बंगाल (Bengal) दिल्ली(Delhi), महाराष्ट्र (Maharashtra) हैं।

आस्ट्रेलिया की पहली दस जमाअतें जो हैं मेलबर्न लॉंग वार्न (Melbourne Long Warren) कासल हिल (Castle Hill), मलबर्न बेरोक (Melbourne Berwick), मारसिडन पार्क (Marsden Park), एडीलड साउथ (Adelaide South), पेन रथ (Penrith), ए सी टी कैनबरा (ACT Canberra), एडीलाइड वैस्ट (Adelaide West), माउंट डरोइट (Mount Druitt), पैरामाटा (Paramatta) ये सब जमाअतों के मुवाज़ने हैं। अल्लाह तआला इन सबके जीवन तथा धन में बे-इंतिहा बरकत अता फ़रमाए और उनकी क़ुर्बानियों को स्वीकार फ़रमाए। इसके साथ ही अब मैं जैसा कि मैंने कहा तहरीक जदीद के सत्तासीवें वर्ष का भी ऐलान करता हूँ जो अब शुरू हुआ है। इंशा अल्लाह 1 नवंबर से वह शुरू हो चुका है।

अब में इस तरफ़ भी ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि आजकल बहुत दुआओं की निश्चित रूप से ज़रूरत है। दुआओं की तरफ़ ध्यान करें। हम अपने लिए और जमाअत के लिए तो दुआएं करते हैं। मुसलमानों के लिए उमूमी तौर पर भी दुआओं की निश्चित रूप से ज़रूरत है। आजकल मुसलमानों के ख़िलाफ़ ग़ैर मुस्लिम दुनिया के कुछ देशों के लीडर बड़ी नफ़रत और द्वेष की भावनाएं रखते हैं और ज़ाहिर है लीडर जो हैं वो इस प्रजातंत्र में अवाम को ख़ुदा समझ कर उनकी इच्छा के अनुसार अपने वर्णन और पालिसियां बनाने की कोशिश करते हैं या स्वयं ही कई बार उनकी ग़लत रहनुमाई करके इस तरफ़ ले जाने की कोशिश करते हैं कि ख़ुदा नहीं है बल्कि तुम ही सब कुछ हो। ये लोग जहां खुल कर वर्णन नहीं भी करते वहां भी दिलों में इस्लाम के ख़िलाफ़ नफ़रतें और शंकाएं लिए हुए हैं और लोगों का एक बड़ा हिस्सा भी इस्लाम से सही वाक़फ़ीयत न होने के कारण से मुसलमानों के ख़िलाफ़ है। बहरहाल हम ने दुआओं के साथ, कोशिश के साथ दुनिया को बताना है कि इस्लाम की हक़ीक़त क्या है। पिछले दिनों खुल कर यदि किसी मग़रिबी लीडर का वर्णन आया है, वैसे तो किसी न किसी तरह कुछ न कुछ सयासी तौर पे लिपटे लिपटाए फ़िक़्रात वर्णन करके या इस तरह गोल मोल से शब्दों में वर्णन आते रहते हैं लेकिन खुल के किसी लीडर का वर्णन आया तो वह फ्रांस का सदर था। उसने इस्लाम को क्राइसेस का शिकार धर्म ठहराया है। क्राइसेस का शिकार यदि है तो स्वयं उनका अपना मज़हब है। प्रथम तो वह किसी मज़हब को मानते ही नहीं, ईसाइयत को भी भूल बैठे हैं। क्राइसेस का शिकार तो ये हैं। इस्लाम तो अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जीवित धर्म है और फलने फूलने वाला मज़हब है और फल फूल रहा है और अल्लाह तआला हर ज़माना में इसकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी लिए हुए है। इस ज़माने में भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा से इस की तब्लीग़ दुनिया के चारों कोनों में फैल रही है। असल बात यह है कि इस्लाम के विरुद्ध शक्तियां या लोग इसलिए इस किस्म की हरकतें करते हैं और बयान देते हैं कि उन्हें पता है कि मुसलमानों में आपस में एकता नहीं है। यहां कैनेडा के प्रधानमन्त्री का बहरहाल में प्रशंसा के रंग में वर्णन कर दूं। उन्होंने फ्रांस के सदर के बयान पर बड़ा अच्छा बयान दिया है कि ये सब कुछ ग़लत है और यह नहीं होना चाहिए और एक दूसरे की मज़हबी भावनाओं का और मज़हबी लीडरों का ख़्याल रखना चाहिए। काश कि बाक़ी दुनिया के लीडर भी वज़ीर-ए-आज़म कैनेडा की सोच और वर्णन को थोड़ा ग़ौर से देखने वाले हों और दुनिया के अमन और सुकून को क़ायम करने के लिए इस पर अमल करें। बहरहाल ये कैनेडा के वज़ीर-ए-आज़म साहिब इस दृष्टि से तारीफ़ के योग्य हैं और हमें उनके लिए दुआ भी करनी चाहिए। अल्लाह तआला उनका सीना और खोले।

बहरहाल ये तो ज़ाहिर है कि मुसलमानों में एकता नहीं है इस की वजह से ये सब कुछ हो रहा है। मुसलमानों का हर एक मुल्क दूसरे मुल्क के ख़िलाफ़ है। फ़िर्कावारीयत ने बाहर की दुनिया में यह ज़ाहिर कर दिया है कि मुसलमानों में फूट है। यदि दुनिया को पता हो कि मुस्लमान एक हैं, एक ख़ुदा और एक रसूल के मानने वाले हैं और उसकी ख़ातिर क़ुर्बानियां देना जानते हैं तो कभी ग़ैर मुस्लिम दुनिया की तरफ़ से ऐसी हरकतें न हों। कभी किसी अख़बार को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ाके छापने का साहस न हो। कुछ वर्ष पहले भी डेनमार्क में भी और फ्रांस में भी जो ख़ाके छपे थे उस पे वक़्ती शोर मचा कर और उनकी चीज़ों का बाईकॉट करके, न ख़रीदने का ऐलान करके फिर ख़ामोश हो कर बैठ गए। कुछ भी नहीं हुआ। कुछ महीनों के बाद ख़ामोशी हो गई। उस वक़्त भी जमाअत अहमदिया ने ही सही रद्दे अमल दिखाया था और उनके सामने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़ूबसूरत जीवनी पेश की थी जिसकी बहुत से ग़ैरों ने, पढ़े लिखे तबक़े ने, लीडरों ने, लोगों ने प्रशंसा की थी और पसंद किया था और यही काम हम आज भी कर रहे हैं और बताते हैं कि कुछ सर फिरे लोगों के इस्लाम के नाम पर ग़लत अमल को इस्लाम का नाम न दो। किसी मुल्क के सदर का यह काम नहीं है कि किसी व्यक्ति के ग़लत अमल को इस्लाम की शिक्षा और मुसलमानों के लिए क्राइसेस का नाम देकर फिर अपने लोगों को और भड़काया जाए कि उनके ख़िलाफ़ हमारी यह लड़ाई है और यह लड़ाई हम जारी रखेंगे। उस व्यक्ति को ग़लत अमल पर भड़काने वाले भी तो ये स्वयं ही हैं। मैंने पहले भी यह बताया दिया था कि ये ख़ाके (ड्रॉइंग) इत्यादि बनाना या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तौहीन किसी रंग में करना किसी भी ग़ैरत मंद मुस्लमान को बर्दाश्त नहीं है और ये हरकतें कुछ मुसलमानों की भावनाओं को भड़का सकती हैं और भड़काती हैं और फिर यदि किसी से कोई कानून के विरुद्ध हरकत हो जाए, यदि कोई व्यक्ति क़ानून अपने हाथ में ले-ले तो उसके ज़िम्मेदार फिर ये ग़ैर मुस्लिम लोग हैं, ये हुकूमतें हैं या तथाकथित आज़ादी है जिस को फ्रीडम आफ़ एक्सप्रेशन का नाम, इज़हार-ए-ख़्याल का नाम दिया जाता है। बहरहाल ये ग़ैर मुस्लिम दुनिया उनके जज़बात भड़काती है। मैंने उस वक़्त भी जब पहली बार यह विषय उठाया था ख़ुत्बों के एक सिल्सिला में सही प्रतिक्रिया की वज़ाहत की थी कि हमें किस तरह

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

सही प्रतिक्रिया करनी चाहिए और क्या दिखाना चाहिए और इसका जैसा कि मैंने बताया कि लोगों पर अच्छा असर भी हुआ था और अभी तक हम निरंतर वो किए जा रहे हैं और उसी तरीक़े को जारी रखे हुए हैं।

फिर हॉलैंड के सियास्तदान ने जो एक बयान दिया था तो उस वक़्त भी हॉलैंड में मैंने एक भाषण दिया था और उसको अल्लाह तआला के अज़ाब से डराया था बल्कि इस पर उसने हॉलैंड की हुकूमत से निवेदन भी किया था कि उसने मुझे मौत की धमकी दी है और मेरे ख़िलाफ़ उसने हॉलैंड की हुकूमत को यह कहा था कि इस का यहां आना बैन किया जाए बल्कि उस पे मुक़द्दमा चलाया जाए। तो बहरहाल हम तो जहां तक हो सकता है क़ानून के दायरे में रहते हुए इस्लाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम के ख़िलाफ़ होने वाली हर हरकत का जवाब देते हैं और देते रहेंगे और इस का असर भी होता है और यही हल पेश करते हैं कि क़ानून के दायरे में रहते हुए हर क़दम हमें उठाना चाहिए और सबसे बढ़कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजना चाहिए और दुआ करनी चाहिए और पिछले कई ख़ुतबात में मैं इस बात की तहरीक कर चुका हूँ और हमारे बारे में ग़ैर अहमदी उल्मा के सख़्त वर्णन के अतिरिक्त हम इस्लाम के दिफ़ा में इस्लाम की सच्ची तालीम की रोशनी में अपना काम करते चले जाऐंगे और करते चले जा रहे हैं। इंशा अल्लाह तआला।

एक या दो या चार आदमी को क़तल करने से वक़्ती जोश तो निकल जाता है लेकिन यह कोई स्थाई हल नहीं है। इस्लाम के मानने वाले यदि स्थाई हल चाहते हैं तो समस्त मुस्लमान दुनिया इकट्ठी हो। अब भी फ़्रांस के सदर के जवाब में तुर्की के सदर ने जवाब दिया या एक दो और देशों ने प्रतिक्रिया ज़ाहिर की तो यह बात इतना प्रभाव नहीं डाल सकती जितना कि समस्त मुस्लमान देशों की एक प्रतिक्रिया का प्रभाव हो सकता है। जबकि यह कहा जाता है कि तुर्की इत्यादि की प्रतिक्रिया पर फ़्रांस के सदर ने अपना बयान बदला और कुछ नर्म किया कि मेरा मतलब यह नहीं था, मेरा मतलब यह था। परन्तु साथ ही अपनी बात पर भी क़ायम रहा है कि जो हम कर रहे हैं वह ठीक कर रहे हैं। लेकिन यदि चोव्वन पचपन मुस्लमान देश एक ज़बान हो कर बोलते तो फिर वह फ़्रांस का सदर किन्तु, परन्तु की बात न करता । फिर उसको विवश होकर बहरहाल माफ़ी मांगनी पड़ती, घुटने टेकने पड़ते।

बहरहाल मैं यहां संक्षेप में इतना ही कहना चाहता था कि दुआ करें कि मुस्लमान देशों में कम से कम ग़ैरों के सामने एक हो कर आवाज़ उठाएं फिर देखें कितना प्रभाव होता है। हम तो अपना काम किए जा रहे हैं और करते रहेंगे इंशा अल्लाह तआला कि मसीह मुहम्मदी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के मानने वालों का यह काम है, यह फ़र्ज़ है कि इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा को दुनिया में फैलाएं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ूबसूरत चेहरे को दुनिया को दिखाएंगे और उस समय तक चेन से न बैठें जब तक समस्त दुनिया को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे तले न ले आएं। दुनिया को बताएं कि तुम्हारी बक़ा इसी में है कि एक ख़ुदा को पहचानो और ज़ुल्मों को ख़त्म करो। कुछ अरसा पहले कोविड के दौरान मैंने कुछ हुकूमत के लीडरों को दुबारा पत्र लिखे थे। फ़्रांस के सदर को भी मैंने लिखा था और इस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के शब्दों में यह चेतावनी भी की थी कि यह अज़ाब और आफ़तें अल्लाह तआला की ओर से ज़ुल्मों के कारण से आते हैं इसलिए तुम्हें इस ओर ध्यान देने की निश्चित रूप से ज़रूरत है। ज़ुल्मों को ख़त्म करो और इन्साफ़ को क़ायम करो और हक़ पर आधारित बयान दो। हमने जो अपना फ़र्ज़ था पूरा किया है और करते रहेंगे। अब यह किसी की मर्ज़ी है कि चाहे वे इस को समझे या न समझे लेकिन हमने बहरहाल समस्त मुस्लिमा को दुआओं में नहीं भूलना। अल्लाह तआला उन्हें तौफ़ीक़ दे कि ये आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को भी पहचान लें और दुनिया को उमूमी तौर पर भी सोचना चाहिए कि ऐसी बातें करके यदि वो ख़ुदा से दूर हटते चले गए तो उनकी तबाही के अतिरिक्त कुछ नहीं है और उमूमी तौर पर हमने भी यह कोशिश करनी है कि दुनिया को अल्लाह तआला की तौहीद के नीचे लाएं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे के नीचे लाना यही तहरीक-जदीद का उद्देश्य भी है और अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ भी अता फ़रमाए। इसके अतिरिक्त दुनिया के उमूमी हालात के लिए भी दुआ करें। बड़ी तेज़ी से इस तरफ़ बढ़ रहे हैं इस बीमारी से जब जान छूटे तो यह न हो कि एक और आफ़त जंग-ए-अज़ीम की सूरत में इन पर नाज़िल हो जाए। अल्लाह तआला दुनिया को अक़्ल और समझ दे और ख़ुदाए वाहिद को पहचान कर उस का हक़ अदा करने वाले बनें।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 27 नवंबर 2020-ई- पृष्ठ 5 से 11)

पृष्ठ 2 का शेष

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की रिहायश गाह के बाहरी हिस्सा को ख़ूबसूरत झंडियों से सजाया था।

जैसे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर तशरीफ़ लाए आदरणीय अमीर साहिब यूके रफ़ीक़ अहमद हयात साहिब और मुबल्लिग़ इंचार्ज यू.के आदरणीय अताउल मुजीब राशिद साहिब ने हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने स्नेह करते हुए अपना हाथ ऊंचा करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ जिन ख़ुशनसीब लोगों को इस सफ़र पर जाने की सौभाग्य नसीब हुई उनके नाम रिकार्ड के लिए दर्ज किए जाते हैं।

हज़रत सय्यदा अमतुस्सबूह साहिबा मद्द ज़िल्हा आली (पत्नी सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) आदरणीय मुनीर अहमद ज़ाएद साहिब (प्राइवेट सैक्रेटरी आदरणीय आबिद वहीद ख़ान साहिब (इंचार्ज प्रैस ऐंड मीडिया ऑफ़िस लंदन आदरणीय हम्माद मुबय्यन साहिब, मुरब्बी सिलसिला (दफ़्तर प्राइवेट सैक्रेटरी) आदरणीय सय्यद मुहम्मद अहमद नासिर साहिब नायब अफ़्सर हिफ़ाज़त विशेष लंदन, आदरणीय नासिर अहमद सईद साहिब (हिफ़ाज़त विभाग) आदरणीय सख़ावत अली बाजवा साहिब (विभाग हिफ़ाज़त) *आदरणीय ख़्वाजा क़ुद्दूस साहिब (हिफ़ाज़त विभाग) *आदरणीय महमूद अहमद ख़ान साहिब (हिफ़ाज़त विभाग)*आदरणीय मिर्ज़ा लईक अहमद साहिब (हिफ़ाज़त विभाग) *आदरणीय इबराहीम मुनीब अहमद मिल्ही साहिब (हिफ़ाज़त विभाग) विनीत अब्दुल माजिद ताहिर (ऐडीशनल वकीलुल तब्शीर लंदन)

इसके अतिरिक्त आदरणीय नदीम अहमद अम्मीनी साहिब,आदरणीय मुहम्मद अहमद साहिब, आदरणीय अब्दुर्रहमान साहिब और आदरणीय राना मक़सूद अहमद साहिब को क़ाफ़िला की गाड़ियां ड्राईव करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

एम टी ए इंटरनैशनल (यू.के)के निम्नलिखित मेंबरों ने इस दौरे के समस्त जुम्अ: के ख़ुत्बों, हॉलैंड और फ़्रांस के जलसा सालाना , हुज़ूर अनवर के इंटरव्यूज़ और प्रैस कान्फ्रैंसज़, मस्जिदों के उद्घाटन और receptions के विभिन्न आयोजनों और अन्य समस्त प्रोग्रामों की रिकार्डिंग और live ट्रांसमिशन के लिए इस दौरा में शामिल होने का सौभाग्य पाया। आदरणीय मुनीर अहमद ऊदा साहिब, आदरणीय ख़्वाजा सफ़ीरुद्दीन क़मर साहिब, आदरणीय अदनान ज़ाहिद साहिब, आदरणीय अबरार बेग साहिब, आदरणीय ज़की उल्लाह साहिब, आदरणीय क़मर अहमद ज़फ़र साहिब।

एम टी ए की टीम के अतिरिक्त मख़ज़ने तसावीर विभाग से आदरणीय ग़िद्दीर अहमद भी इस दौरा में शामिल होने का सौभाग्य पाया। दौरा की कवरेज के लिए रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़, अल-हकम और तीन द्विसीय अलफ़ज़ल इंटरनेशनल की टीमों को भी काम करने की तौफ़ीक़ मिली। जर्मनी से डाक्टर अतहर ज़ुबैर साहिब इस सफ़र के दौरान बतौर डाक्टर क़ाफ़िला के साथ रहे। इन लोगों के अतिरिक्त जर्मनी से आदरणीय अब्दुल्लाह सपरा साहिब को भी इस सफ़र में क़ाफ़िला के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अल्लाह तआला इन सब लोगों के लिए यह सौभाग्य मुबारक करे आमीन।

(समाप्त.....)

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

अल्लाह तआला की तरफ़ से आने वाले का इनकार करने वाले जहन्नुम की तरफ़ ले जाए जाएंगे

कोई सम्मान्नीय इन्सान ऐसा नहीं गुज़रा कि जिस पर उसके ज़माना के मुसलमानों और इस्लाम के ठेकदार समझने वालों ने उस पर कुफ्र का फ़तवा न लगाया हो। फिर यह कैसे हो सकता था कि वर्तमान युग में अल्लाह तआला ने जिसे मसीह तथा महदी बनाकर भेजा है इस के ख़िलाफ़ इस्लाम के ठेकदार कुफ्र के फ़तवा न लगाते। अल्लाह तआला ने इस्लाम से पहले मानव जाति के सुधार के लिए अंबिया और रसूल भिजवाए थे। और इस्लाम के बाद यह नियम उसूल बनाया कि अब वही उम्मती नबी तथा रसूल आएगा। जिस के बारे में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़बर दी होगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी उम्मती नबी तथा रसूल हैं आप के प्रादुर्भाव के बारे में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़बर दी थी। जिस तरह भूतकाल में विभिन्न किस्म के बे-बुनियाद और ग़लत बहाने बनाकर अंबिया का इन्कार किया गया। वर्तमान ज़माना में भी विभिन्न प्रकार के बहाने वर्णन करके आने वाले का इनकार किया जा रहा है ऐसे इनकार करने वालों के बारे में अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फ़रमाता कि:

" और वे लोग जिन्होंने कुफ्र किया गिरोह दर गिरोह जहन्नुम की तरफ़ हांके जाऐंगे। यहां तक कि जब वे उस के पास आ जाऐंगे उस के दरवाज़े खोल दिए जाऐंगे और इस के दारोग़ा उन से कहेंगे क्या तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल नहीं आए थे जो तुम पर तुम्हारे रब की आयतों की तिलावत करते थे और तुम्हें इस दिन की मुलाक़ात से डराया करते थे? वे कहेंगे क्यों नहीं। लेकिन अज़ाब का फ़रमान काफ़िरों पर अवश्य आ गया।"

(सूरत अज़ुज़मर 39/72)

अल्लाह के मामूर का इन्कार करने वालों की क़यामत के दिन फरयाद

जो लोग अपने ज़माना के उल्मा और लीडरों के कहने पर अल्लाह तआला की तरफ़ से भेजे हुए मामूर का इन्कार करते हैं,वे क़यामत के दिन अल्लाह तआला से अपने लीडरों के बारे में फ़र्याद करेंगे कि " जिस दिन उनके चेहरे जहन्नुम में औंधे किए जाऐंगे वे कहेंगे हे काश हम अल्लाह तआला की इताअत करते और रसूल की इताअत करते। और वे कहेंगे हे हमारे रब! अवश्य हम ने अपने सरदारों और अपने बड़ों की इताअत की थी अत: उन्होंने हमें गुमराह कर दिया। हे हमारे रब उन्हें दुगना अज़ाब दे और उन पर बहुत बड़ी लानत कर।"

(सूरत अल-अहज़ाब 33/67)

दुआ है अल्लाह तआला हर मुसलमान को मसीह मौऊद व महदी अलैहिस्सलाम को क़बूल करके उन की जमाअत में शामिल होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन।

एक ग़ैर अहमदी दोस्त ने अहमदिया मुस्लिम जमाअत के बारे में कुछ सवाल भिजवाए थे उनके उत्तर पाठकों के लाभ लिए लिखे जाते हैं

प्रश्न :बहुत से मुसलमान कहते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपने दुनयावी जिस्म के साथ दो हज़ार साल से आसमान पर ज़िन्दा हैं वही आख़री ज़माना में ज़मीन पर नाज़िल होंगे , फिर किसी और "मसीह" की क्या ज़रूरत है?

जवाब: अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में भी फरमाया है कि

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ

(आले इम्रान सूरत नम्बर 3 आयत 145)

(अनुवाद)मुहम्मद सिर्फ एक रसूल है। इस से पहले सब रसूल वफात पा चुके हैं।

इस आयत में अल्लाह तआला ने स्पष्ट तौर पर फ़र्मा दिया है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले के समस्त रसूल जिनमें हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात का ज़िक्र है ,सब के सब फ़ौत हो चुके हैं,इन में से कोई भी इस दुनियावी जिस्म के साथ ज़िन्दा नहीं। और न ही उन में से कोई वापस आएगा। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम भी उन्हीं में शामिल हैं।

अल्लाह तआला एक और आयत में फरमाता है कि

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّن قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۖ أَفَإِن مِّتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ

(सूरत अल-अंबिया ,सूरत नम्बर 21 आयत 35)

(अनुवाद)और हमने किसी इन्सान को तुझ से पहले हमेशा की ज़िन्दगी नहीं प्रदान की। क्या अगर तू (अर्थात मुहम्मद) मर जाए तो वह ग़ैर तिब्बी उम्र तक ज़िन्दा रहेंगे।

प्रिय पाठको ! ग़ौर फ़रमाएं अल्लाह तआला कितनी ग़ैरत से फ़रमाता है कि यह नहीं हो सकता कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो संसार की सृष्टि में से सबसे अधिक लाभदायक हस्ती हैं आप फ़ौत हो जाएं और कोई आपसे पहले का इन्सान ज़िन्दा रहे। अत: प्रमाणित हुआ कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम समस्त इन्सानों की तरह जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले गुज़रे हैं फ़ौत हो चुके हैं।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी महदी मअहूद, मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन मजीद की 30(तीस आयतों से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की समस्त अंबिया की तरह मौत साबित की है। आप फरमाते हैं:

वह नहीं बाहर रहा अम्वात से
हो गया साबित यह तीस आयात से।

सवाल करने वाले पाठक से निवेदन है कि गहराई से किताब इज़ाला औहाम ,रुहानी ख़ज़ाईन भाग 3 का अध्ययन करें। यह किताब जमाअत की वेबसाइट www.alislam.org पर मौजूद है। इसी तरह पुस्तक के रूप में भी उपलब्ध है।

इसी तरह वर्णन है कि पहले मसीह अर्थात हज़रत ईसा बिन मर्यम अलैहिस्सलाम जो लगभग दो हज़ार साल पहले फ़िलस्तीन के शहर बैयतुल लहम में पैदा हुए थे,एक लाख चौबीस हज़ार अंबिया की तरह फ़ौत हो चुके हैं। अब वह दोबारा इस दुनिया में वापस नहीं आएँगे। क़ुरआन और इंजील के अनुसार वह बनी इस्राईल (यहूद)की तरफ़ नबी तथा रसूल बनाकर भेजे गए थे। अत:वह उम्मत मुहम्मदिया की तरफ़ रसूल बन कर हरगिज़ नहीं आ सकते। अल्लाह तआला ने हमारे प्यारे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़ुरआन मजीद जैसी सम्पूर्ण किताब देकर भेजा। यह किताब क़यामत तक चिर-स्थायी रहेगी। इसके नुज़ूल के बाद पहले इंजील वाले ईसा इब्ने मरियम हरगिज़ नहीं आ सकते। कुछ मुसलमान यह कहते हैं कि जब वह दोबारा आयेंगे तो वह नबी और रसूल की हैसियत से नहीं आएँगे। ऐसे मुसलमानों से सवाल है कि वह बताएं कि अगर किसी प्रधानमन्त्री के बारे में कहा जाए कि पहले तो यह प्रधानमन्त्री थे। लेकिन अब प्रधानमन्त्री के पद के बिना आए हैं? बताऐं बिना योग्यता का प्रधानमन्त्री क्या करेगा? हक़ीक़त यह है कि यह सब कल्पनाएं हैं। असल बात ये है कि अल्लाह तआला ने पहले मसीह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को सलीबी मौत से बचा लिया था। और वह हिजरत करके शाम, इराक़ , ईरान, अफ़ग़ानिस्तान (और वर्तमान पाकिस्तान) का सफ़र तय करके आख़िरी उम्र में हिन्दुस्तान में श्रीनगर प्रान्त कश्मीर पहुंच गए थे। और वहां ही उन की वफ़ात हुई थी। उनकी क़ब्र मोहल्ला खानियार ,श्रीनगर में मौजूद है। अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में फ़रमाया है कि जो फ़ौत हो जाते हैं वे कभी भी इस दुनिया में वापस नहीं आते।

أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

(सूरत यूनस ,सूरत नम्बर 36 आयत 32)

अनुवाद: यक़ीनन वो उनकी तरफ़ लौट कर नहीं आयेंगी।

सवाल आपकी तरफ़ से दी गए दलीलों से यह विश्वास हो गया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बाक़ी नबियों की तरह फ़ौत हो गए हैं और वह वापस इस ज़मीन पर नाज़िल नहीं होंगे, परन्तु यह बताएं कि इन हदीसों का क्या अर्थ है जिनमें ये शब्द मौजूद हैं कि '' ینزل فیکم ابن مریم 'कि तुम में "अब मर्यम" नाज़िल होंगे?

जवाब मुसलमानों से पहले यहूद भी इसी तरह के एक धोखे में पड़े थे। उनका कहना था कि हमारी किताब मुक़द्दस (सलातीन 2 बाब 2 आयत 11)में लिखा है कि एलिया (अर्थात हज़रत इल्यास अलैहिस्सालम) बगोले में आसमान पर चला गया है। और "मसीह" के आने से पहले वह आसमान से उतरेगा।

(उद्धरित मलाक़ी 4-6)

जब लगभग दो हज़ार साल पहले यसू मसीह (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) दुनिया में आए तो यहूद ने यह सवाल किया कि हम तुझे कैसे सच्चा मान लें ?हमें तो यह वादा दिया गया था "यसू मसीह" के आने से पहले एलिया जो आसमान पर चला गया है वह वापस ज़मीन पर उतरेगा। वह तो उतरा नहीं ?इस पर यसू मसीह (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) ने जवाब दिया कि "एलिया" जो आने वाला था यहया (हज़रत यहया अलैहिस्सलाम) हैं। जिसके सुनने के कान हों वह सुन ले।

(उद्धरित इंजील मति बाब 11, आयत 14)

हज़रत मसीह अलैहिस्सालम से यह जवाब सुनने के बाद यहूद में अधिकतर ने यसू मसीह(हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) को सच्चा मसीह मानने से इन्कार कर दिया। उन्हें काफ़िर और काज़िब और बुरा भला कहते रहे और अपने विचार के अनुसार एलियाह के आसमान से नाज़िल होने का इंतज़ार करते रहे और अब तक कर रहे हैं। उन के विचार के अनुसार पहले एलियाह उतरेगा फिर यसू मसीह आएगा। यसू मसीह (अर्थात)हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने बहुत समझाया कि जो आसमान पर चला जाता है वह ज़मीन पर दोबारा नहीं आता। इस समझाने पर यहूद में से जिसने अपनी अक़ल तथा समझ को प्रयोग किया उस ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को सच्चा समझ लिया और आप पर ईमान ले आया। दूसरे अब तक इंतज़ार कर रहे हैं।

यही अवस्था वर्तमान युग के मुसलमानों की है जो इस हक़ीक़त को नहीं समझते हैं कि हदीस में जो यह आया है कि "तुम में इब्ने मरियम नाज़िल होगा" से अभिप्राय है कि "इब्ने मरियम" का प्रतिरूप उस के गुण तथा विशेषताओं वाला मसीह इब्ने मरियम (अर्थात मुहम्मदी मसीह) मुसलमानों में से आएगा। क्योंकि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्पष्ट तौर पर फ़रमाया था कि हे मुसलमानों "फ़ीकुम व मिनकुम" वह तुम में तुम्हारे में से ही आएगा।

और आने वाले (हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम)का एक नाम "मसीह मौऊद"(ऐसा मसीह जिसका वादा दिया गया था) रखने के कारण यह था कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने यह पेशगोई की थी। और अपने अनुयायियों और मानने वालों को कहा था कि मेरे कुछ गुणों से समन्वित एक "मसीह" आएगा, तुम इस पर ईमान लाना। अल्लाह तआला ने हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम को इल्हाम के द्वारा फ़रमाया "اِنَّا جَعَلْنَاكَ الْمَسِيْحَ اِبْنَ مَرْيَمَ (हम ने तुझे मसीह बिन मर्यम बनाया है)। इसी लिए हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट तौर पर ऐलान फ़रमाया

"मैं मुसलमानों के लिए महदी अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का प्रतिरूप हूँ, और ईसाइयों के लिए मसीह मौऊद अर्थात मसीह नासरी का प्रतिरूप बन कर आया हूँ।" (सीरतुल महदी हिस्सा 3 पृष्ठ 541 रिवायत नम्बर 554)

इंशा अल्लाह तआला इस उत्तर से सवाल पूछने वाले हक़ीक़त को समझ जाऐंगे।

☆ ☆ ☆ ☆

ज़कात एक अहम फ़रीज़ा

(नाज़िर बैत-उल-माल आमद क़ादियान)

जमात के लोगों को ज्ञात है कि क़ुरआन-ए-करीम में नमाज़ के साथ साथ ज़कात का आदेश है इस लिए समस्त साहिब निसाब पुरुषों और महिलाओं से निवेदन है कि वे इस महत्त्वपूर्ण कर्तव्य को पूरा करने की ओर ध्यान फ़रमाएं।

ज़कात इस्लाम का एक बुनियादी रुकन है जो प्रत्येक साहिब निसाब पर अनिवार्य है। इसके सम्बन्ध में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम फ़रमाते हैं :

"हे वे समस्त लोगो! जो अपने सम्बन्ध में मेरी जमाअत में गिनते हो आसमान पर तुम उस वक़्त मेरी जमात में गिने जाओगे जब की तुम सच-मुच संयम के मार्गों में आगे बढ़ोगे। अत: अपनी पांच समय की नमाज़ों को ऐसे भय और दर्द से पढ़ों कि मनो तुम ख़ुदा ताआला को देखते हो अपने रोज़ों को ख़ुदा के लिए सच्चाई के साथ पूरा करो। प्रत्येक जो ज़कात के योग्य है वह ज़कात दे।"

(कश्ती ए नूह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 19, पृष्ठ15)

ज़ेवरों की ज़कात के बारे में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम फ़रमाते हैं :"जो आभूषण पहने जाएँ और कभी-कभी ग़रीब महिलाओं को प्रयोग के लिए दिये जाएँ, कुछ का इस के संबंध में यह फ़तवा है कि उसकी कुछ ज़कात नहीं और जो आभूषण पहने जाएँ और दूसरों को प्रयोग के लिए न दिया जाए उस में ज़कात देना बेहतर है कि वह स्वयं के लिए प्रयोग होता है । इसी पर हमारे घर में अमल करते हैं और प्रत्येक वर्ष के बाद अपने पास मौजूद आभूषणों की ज़कात देते हैं और जो आभूषण रुपय की भांति जमा रखा जाए उसकी ज़कात में किसी को भी मतभेद नहीं।" (अलहकम 17 नवम्बर 1905 ई, पृष्ठ1)

सय्यदना हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

"याद रखना चाहीए कि ये टैक्स जिसे ज़कात कहते हैं आमद पर नहीं है बल्कि पूंजी और लाभ सबको मिला कर उस पर लगाया जाता है और इस प्रकार अढ़ाई फ़ीसद वास्तव में कई बार लाभ का पच्चास फ़ीसदी बन जाता है।"

(अहमदियत यानी हक़ीक़ी इस्लाम, अनवारुल उलूम , भाग 8 पृष्ठ 306)

आभूषण और नक़द रुपय के निसाब ज़कात के संबध में सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया है कि "चांदी के लिए चांदी वाला और सोने के लिए सोने वाला वही निसाब होगा जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय मुबारक में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्वयं निर्धारित फ़रमाया था और जहां तक नक़द रुपय के लिए निसाब ज़कात की बात है तो इस वक़्त दुनिया की अक्सरीयत सोने को ही पैसों के लिए मापदंड के रूप में अपनाए हुए है इसलिए नक़द रुपय की ज़कात में भी सोने को ही मापदंड समझा जाएगा।" (मकतूब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ सदर मजलिस इफ्ता के नाम)

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चांदी के लिए साढ़े बावन (52.5) तोला और सोने के लिए साढ़े सात (7.5) तोला निसाब निर्धारित फ़रमाया है। जिस के पास साढ़े बावन (52.5) तौला (612ग्राम) चांदी मौजूद है और इस पर एक साल का समय गुज़र जाए तो इस पर 1/40 हिस्सा अर्थात अढ़ाई फ़ीसद ज़कात देना फ़र्ज़ है। इसी प्रकार जिसके पास साढ़े सात (7.5) तौला (87ग्राम) सोना मौजूद हो या इसके बराबर नक़द रक़म मौजूद हो और इस पर एक वर्ष का समय गुज़र जाए इस पर भी शरह के अनुसार 1/40 हिस्सा अर्थात अढ़ाई फ़ीसद ज़कात देना फ़र्ज़ है। ज़कात की समस्त वसूल की गई रक़म मर्कज़ भिजवानी ज़रूरी है।

अल्लाह तआला हम सबको इस महत्त्वपूर्ण कर्तव्य को अदा करने की तौफ़ीक़ दे और समस्त जमात के लोगों की आयु और धन में बरकत अता करे। आमीन।

☆ ☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

जलसा सालाना क़ादियान 2020 ई स्थगित कर दिया गया है

समस्त ओहदेदारान और जमात अहमदिया भारत के लोगों को सूचित किया जाता है कि जलसा सालाना क़ादियान जो 25 से 27 दिसंबर 2020 ई की तारीख़ों में आयोजित होना था मुल्क में कोरोना बिमारी की अभी की हालत, आने जाने की कठिनाइयों को और अन्य पाबंदीयों को दृष्टिगत रखते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहु-ल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इर्शाद पर जलसा स्थगित कर दिया गया है।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद मर्कज़िया क़ादियान)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 10 December 2020 Issue No.50

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 2 का शेष

जमाअत खड़ी करो तो ख़ुशबू लगा लो।

दोनों ईदों में और जुम्अ: में ख़ुशबू लगाने का जो आदेश है वह इसी आधार पर क़ायम है। असल कारण यह है कि इज्तिमा के वक़्त सड़ांध का अंदेशा है। अत: नहाने और साफ़ कपड़े पहनने और ख़ुशबू लगाने से गन्दगी और सड़ांध से रोक होगी। जैसा अल्लाह तआला ने ज़िन्दगी में यह निर्धारित किया है वैसा ही क़ानून मरने के बाद भी रखा है।

काफ़ूर की विशेषताएं

मुसलमान को मरते वक़्त काफ़ूर का प्रयोग करना सुन्नत है। यह इस लिए कि काफ़ूर ऐसी चीज़ है जो महामारी के कीड़ों को मारती और गन्दगी को दूर करती है। इन्सान के लिए ठंडक पहुंचाती है। बहुत सी सडांध वाली बीमारियों को रोकती है इस लिए क़ुरआन में आदेश है कि मोमिनों को काफ़ूरी शर्बत पिलाया जाएगा। और आजकल भी अनुसन्धानो से यह साबित हुआ है कि काफ़ूर जैसे हैज़ा के लिए लाभदायक है वैसा ही ताऊन के लिए लाभदायक है। मैं अपनी जमाअत को बतलाता हूँ कि यह बहुत लाभदायक चीज़ है। और मेरी आस्था है क्योंकि क़ुरआन करीम ने बतलाया है कि यह जलन को रोकता है और इसको सन्तोष और आन्नद देता है। यह हमको इस तरफ़ रग़बत ध्यान है कि काफ़ूर का प्रयोग क्यों करें। आजकल एक बात और प्रमाणित हुई है कि काफ़ूर के साथ जदवार प्रयोग करें। अत: जदवार को लेकर सिरका में मिला कर गोलियां बनानी चाहिऐं और दो दो रत्ती की गोलियां बना कर ताज़ा लस्सी के साथ प्रयोग करो। औरतों और बच्चों को यह गोलियां दैनिक यदि प्रयोग कराई जाएं तो बहुत लाभदायक हैं। हम भी एक दवा तैयार कर रहे हैं जो ख़ुदा तआला चाहेगा बहुत लाभदायक होगी। वास्तव में यह कम्बख़्त बीमारी तो ऐसी है कि किसी इलाज पर भरोसा करना तो ग़लती है जब तक अल्लाह तआला ही का फ़ज़ल न हो परन्तु तंदरुस्ती के आम माध्यम और क़ानूने सेहत में से समय से पहले हिफाज़त के लिए भी एक उत्तम चीज़ है और लाभदायक साबित हुआ है अत: उचित है कि गन्दगी और सड़ांध पैदा करने वाली चीज़ों से परहेज़ किया जाए। और कई तेज़ खुराकों से जो ख़ून के चलने को तेज़ करती हैं। जैसे बहुत गोश्त और बहुत मीठा या सीमा से ज़्यादा धूप में फिरना या सख़्त और कठोर मेहनत करना उनसे परहेज़ करना उचित है।

माध्यम का प्रयोग करना मना नहीं है

माध्यम का प्रयोग करना हमारी शरीयत में मना नहीं है। किसी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि क्या हम दवा करें। आप ने फ़रमाया कि हाँ दवा करो। कोई बीमारी ऐसी नहीं जिसकी दवा न हो। हाँ यह बिल्कुल सच्ची बात है कि कोई वैद्य या डाक्टर यह दावा नहीं कर सकता कि अमुक़ दवा लाभ देगी। यदि ऐसा होता तो फिर कोई क्यों मरता। वैद्यों और डाक्टरों को चाहिए कि मुत्तक़ी बन जाएं। दवा भी करें और दुआ भी। एकान्त में दुआ मांगें। जिन्हों ने घमण्ड किया था ख़ुदा ने उनको ही अपमानित किया है। लिखा है कि जालीनूस को पेचिश (बीमारी) के बंद करने का बड़ा दावा था। ख़ुदा की शान है कि वह ख़ुद उसी बीमारी का शिकार हुआ। इसी तरह कई हकीम कुष्ठ रोगी हो कर और कई टी बी वाले हो कर इस संसार से चल दिए।

अल्लाह तआला पर ही पूर्ण भरोसा करना चाहिए।

मेरा उद्देश्य इससे यह है कि ख़ुदा तआला ने उनके दावों की हक़ीक़त खोल दी और व्यर्थ शेख़ी का भांडा फोड़ कर दिखाया। जो दावा किया इसी दावे में पस्त हुए। मालूम हुआ कि दावा नहीं करना चाहिए। हमारे स्वर्गीय पिता जी भी प्रसिद्ध तबीब थे। और पचास वर्ष का अनुभव था। वह कहा करते थे कि हुक्मी नुस्ख़ा कोई नहीं। हक़ीक़त यही है। अल्लाह के काम करने का ख़ाना ख़ाली रहता है। ख़ुदा तआला की तरफ़ ध्यान करने वाला नेक हैं। मुसीबत में शेख़ी में न आए। अल्लाह के अतिरिक्त पर भरोसा न करे। एक बार ही हल्की बीमारियां अधिक होने लगते हैं। कभी दिल का ईलाज करते करते दिमाग़ पर आफ़त आ जाती है कभी सर्दी के पहलू पर ईलाज करते करते गर्मी का ज़ोर चढ़ जाता है। कौन उसको तय कर सकता है। ख़ुदा पर भरोसा करना चाहिए। इन धरती तथा आकाश की सृष्टि को कोई कब

पृष्ठ 2 का शेष

बाक़ी रहा यह कि इसके अर्थ यह भी हो सकते हैं कि हर व्यक्ति को एक पाक जोड़ा दिया जाएगा तो अनुमानों की दृष्टि से भी कोई आरोप नहीं हो सकता क्योंकि यदि यही अर्थ हों कि हर मर्द को एक नेक पत्नी दी जाएगी और हर औरत को एक नेक मर्द दिया जाएगा तो इस पर क्या आरोप है आरोप तो उसी अवस्था में हो सकता है जब किसी अपवित्र कार्य की ओर संकेत किया जाए जब क़ुरआन शरीफ़ पवित्र का शब्द प्रयोग करता है तो ज़ाहिर है कि जन्नत में वही कुछ होगा जो जन्नत की दृष्टि से पवित्र है फिर इस पर आरोप कैसा।

सर विलियम मियोर ने इस आयत के विषय पर एक निहायत अपवित्र आरोप लगया है और रेवानड वेहरी ने आदत के अनुसार इसकी तसदीक़ की है वह आरोप यह है कि क़ुरआन करीम की मक्की सूरतों में जन्नत में महिलाओं का वर्णन अत्यधिकता से और ज़्यादा जोश से किया गया है लेकिन मदनी सूरतों में सिर्फ दो बार है और अत्यधिकता कम शब्दों में जो यह वर्णन किया गया हैं कि मोमिनों को जन्नत में नेक पत्नियां मिलेंगी है इससे (नऊज़ो-बिल्लाह मीन ज़ालिक) यह नतीजा निकलता है कि चूँकि मक्का में आप की सिर्फ एक बीवी थी और वह भी उम्र में बड़ी इसलिए मुहम्मद साहिब (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को महिलाओं का ख़्याल ज़्यादा आता था परन्तु मदीना में चूँकि यह ख़ाहिश पूरी हो गई और कई जवान बीवीयां मिल गईं यह ख़्याल कम हो गया।

सर विलयम ने जो आरोप लगया है मैं समझता हूँ कि कुरआन के आइना में अपना मुँह देखा है और रेवानड वेहरी ने पादरियों के रिवायती द्वेष को जारी किया है। मुझे आश्चर्य होता है कि ये लोग पढ़े लिखे कहलाते हुए और तहज़ीब का दावा करते हुए करोड़ों इन्सानों के पेशवाओं पर अनुमान की बातों के आधार पर किस प्रकार हमला कर देते हैं हालाँकि स्वयं उन लोगों के अख़लाक़ इतने गिरे हुए और घृणित होते हैं कि इन्सानियत को उनसे शर्म आती है। उनका यह साहस केवल इस कारण है कि इस वक़्त ईसाइयों को हुकूमत प्राप्त है और उनको यह शर्म भी नहीं आती कि जब मुस्लमान दुनिया पर हाकिम थे और मसीहियों का इस से भी ख़राब हाल था कि जो इस वक़्त मुसलमानों का मसीहियों के मुक़ाबला पर है उस वक़्त भी मुसलमानों ने मसीह नासरी के बारे में कठोर शब्दों का प्रयोग कभी नहीं किया। मुसलमानों ने हज़ार साल तक मसीही देशों पर हुकूमत करके उन के सरदार की जिस इज़्ज़त का इज़हार किया काश मसीही लोग दो तीन सौ साल की हुकूमत पर ऐसे मग़रूर न हो जाते कि इस नबियों के सरदार पर इस प्रकार दरिंदों की भांति हमले करते और मुसलमानों के इस एहसान का कुछ तो ख़्याल करते कि उन्होंने मसीह के ख़िलाफ़ कभी जारिहाना क़दम नहीं उठाया अन्यथा हक़ यह है कि मुस्लमान मसीह के सम्बन्ध में इस से बहुत अधिक कह सकते हैं जो मसीही आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्बन्ध में कहते हैं

(तफ़सीर कबीर, भाग प्रथम, पृष्ठ 252 से 253 प्रकाशित क़ादियान 2010 ई)

☆ ☆ ☆ ☆

गिन सकता है। बीमारियों को भी नहीं गिन सकते। लिखा है। कि आँख ही की तीन हज़ार बीमारियां हैं। कई बीमारियां ऐसी होती हैं कि वह ऐसे तौर पर ग़लबा करती हैं कि डाक्टर नुस्ख़ा नहीं लिख सकता जो बीमार का ख़ात्मा हो जाता है। अत: अल्लाह तआला ही की पनाह में आना चाहिए आजकल देखा जाता है कि लोगों को ख़ुदा से सख़्त अज्ञानता और दूरी है। क़ब्रें खोदी जा रही हैं। फ़रिश्त हलाकत के सामान तैयार कर रहे हैं और लोग काटे जाते हैं। इस पर भी नादान ध्यान नहीं करते। महामारी कादियान से 35 कोस की दूरी पर है। यद्यपि गर्मी की तीव्रता के कारण से कम होती जाती है परन्तु क्या कोई कह सकता है कि गर्मी की तीव्रता में कम हो गई तो अगले साल न आएगी मुझे कई बार इलहाम के द्वारा और रोया से मालूम हुआ है कि महामारी देश में फैलेगी और मैं इस को पहले प्रकाशित कर चुका हूँ कि काले रंग के पौधे लगाए जा रहे हैं। लगाने वालों से पूछा। तो उन्होंने ताऊन के दरख़्त बतलाए। यह बड़ी ख़तरनाक बात है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 231 से 232 प्रकाशन 2008 कादियान)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad